पूर्वांचल के गाँधी

बाबू जयराम वर्मा

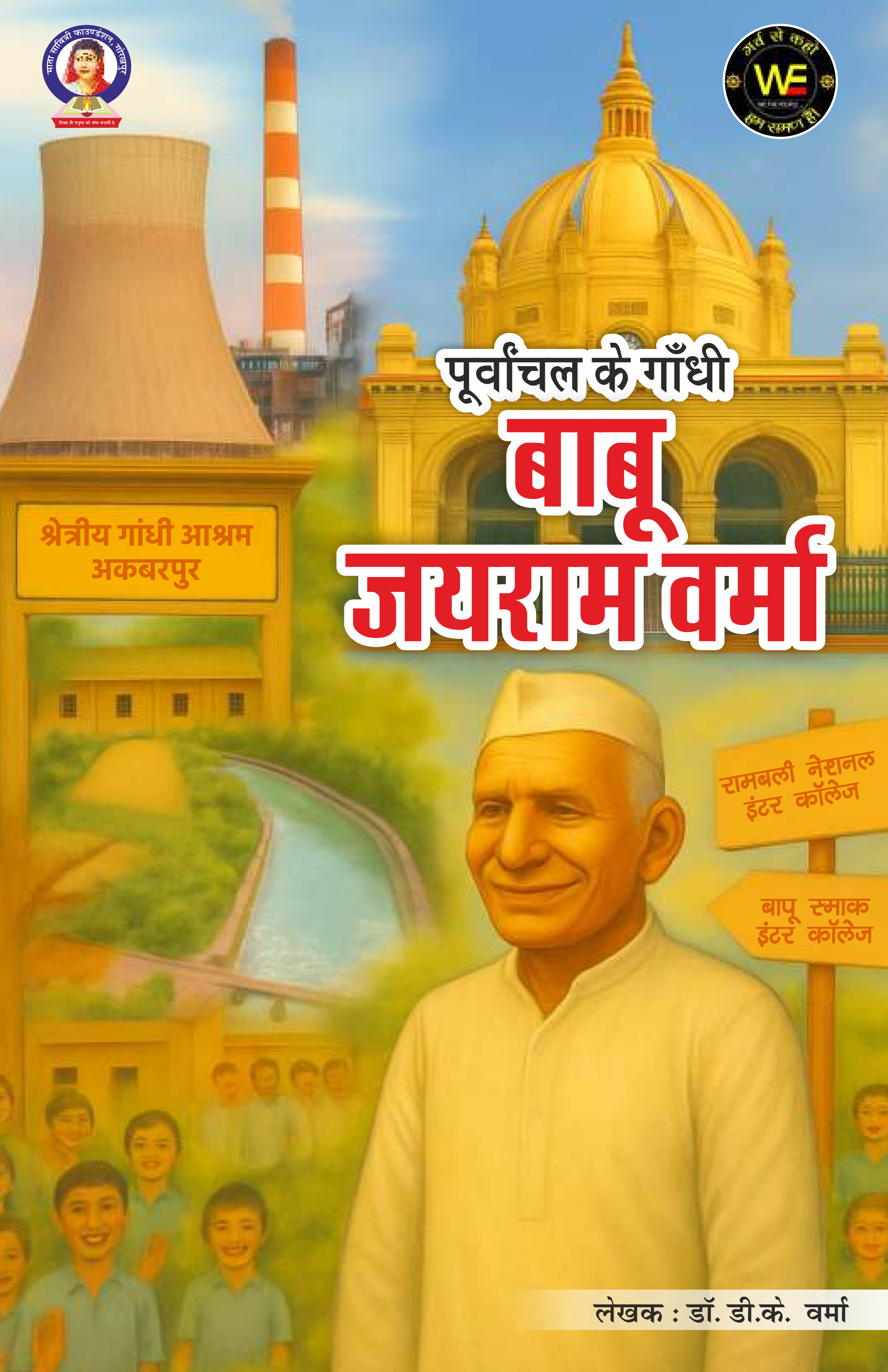

लेखक : डॉ. डी.के. वर्मा

पूर्वांचल के गाँधी

बाबू जय राम वर्मा

डॉ. डी.के. वर्मा

पूर्वांचल के गाँधी बाबू जय राम वर्मा

लेखक : **डॉ. डी.के. वर्मा**

संस्करण : प्रथम 2025

प्रकाशक : ज्ञानप्रकाश जखमी

बुद्ध अम्बेडकर कल्याण एसोसिएशन उ.प्र. (रजि.)
356/340/835, राजगार्डेन कालोनी, आलमनगर,
लखनऊ-226017
मो. 9415941920, 8181819657
E-mail : baks.gpjakhmi@gmail.com

मूल्य : 50.00 रुपये

आवरण : सन्दीप सुल्तानपुरी

सौजन्य से : समण संघ एवं माता सावित्री फाउण्डेशन
Website : https://matasavitrifoundation.in
Mob.: 9838891095

मुद्रक : लक्ष्मी ऑफसेट, 539क/100क/240, देवपुरी भवन,
संजय गांधीपुरम, फैजाबाद रोड, लखनऊ-226016

Poorvaanchal Ke Gandhi Baaboo Jay Ram Verma
Writen By : Dr. D.K. Verma *Rs. 50.00*

सौजन्य से

माता सावित्री फाउण्डेशन
गोरखपुर

समण संघ

पूर्वांचल के गाँधी

बाबू जय राम वर्मा

विषय सूची

1.	प्रस्तावना	7
2.	अभिमत	9
3.	प्राक्कथन	10
4.	प्रकाशकीय	11
5.	दो शब्द	12
6.	बाबू जय राम वर्मा का जीवन वृत्त	20
7.	पूर्वांचल के गाँधी	23
8.	शिक्षा के उद्धारक	24
9.	कृषि का विकास और बाबूजी	27
10.	औद्योगीकरण : स्पिनिंग मिल थर्मल पावर प्रोजेक्ट और विकसित गांधी आश्रम	29
11.	जन्म और बाल्यकाल	31
12.	शिक्षा दीक्षा	35
13.	तत्कालीन जन जीवन	38
14.	स्वाधीनता की लड़ाई	42
15.	गांधी आश्रम अकबरपुर : कैंप कार्यालय	45
16.	राजनीति और समाज सेवा	47
17.	गरीबों मजबूरों के मसीहा	50
18.	कुरीतियों का खात्मा : प्रधान उद्देश्य	53
19.	ईमानदारी की प्रतिमूर्ति	56
20.	बाबा साहब और गांधी जी से विशेष प्रेरणा	58
21.	ज्योतिबा और माता सावित्री आदर्श	60
22.	शाहूजी महाराज थे प्रेरणास्रोत	62
23.	राष्ट्रहित सर्वोपरि	65
24	पारिवारिक जीवन	68
25.	जीवन साथी से बिछोह	72
26.	सबसे बड़ी चोट : युवा बेटे कमला पति का निधन	75
27.	अदम्य साहस और बुद्धिमत्ता के शक्तिपुंज	79
28.	महापरिनिर्वाण : एक युग का अंत	83

प्रस्तावना

बीसवीं सदी में वास्तव में राजनीति में ईमानदारी की बात करें तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में बाबू जय राम वर्मा साहब का नाम बहुत ही निष्ठा और सम्मान से लिया जाता है। उन्हें पूर्वांचल का गांधी भी कहा जाता है। अर्थात उन्हें पूर्वांचल में वह सम्मान प्राप्त है जो देश में महात्मा गांधी को। आजादी के समय से लेकर 39 वर्षों तक लोक सभा और उत्तर प्रदेश की विधान सभा में जनता का प्रतिनिधित्व करने के बाद भी अपना एक आवास भी न बनवा पाना, अपने घर परिवार के लिए कभी कोई भी सुविधा न लेना यहां तक कि घर में कार या मोटरसाइकिल तक न होना, अपने आप में ईमानदारी की अद्वितीय मिसाल है। यहां तक कि एक एक कर उनके परिवार के सभी सदस्य मृत्यु को प्राप्त होते रहे परंतु बाबूजी पता नहीं किस मिट्टी के बने थे कि उन्हें टूटना, थकना, रुकना, हार मानना और निराश होना आता ही नहीं था। प्रस्तुत पुस्तिका में बाबूजी के सामाजिक, राजनैतिक और व्यक्तिगत जीवन के संघर्षों को रेखांकित करते हुए उनके व्यक्तित्व के उन पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है। जिन्हें भारतीय समाज व्यवस्था और सभ्यता की विशेष नियति के चलते छोड़ दिया जाता है और यह मान लिया जाता है कि वर्ण व्यवस्था ही सारी योग्यता और सम्मान की परिधि और सीमा है।

वर्ण व्यवस्था की इनबिल्ट मानसिक और संकुचित जाति योजना जिसमे शूद्र समाज को केवल सेवा के लिए ही बनाया गया है के होते हुए शूद्र समाज के एक व्यक्ति का शिक्षा के क्षेत्र में देश और समाज को बिल्कुल निचले पायदान से ऊपर उठाकर एक उन्नत क्षेत्र बनाने का श्रेय बाबू जय

राम वर्मा साहब को जाता है। उनकी सादगी ,सरलता परंतु तीक्ष्ण बुद्धि से निष्कर्ष निकाल कर क्रियान्वित करा लेने की अद्‌भुत क्षमता उन्हें अपने आप में अद्वितीय बनाती है। अपने परिवार पर लगातार हो रही दैवीय दुर्घटनाओं के मर्मान्तक दंश को झेलते हुए देश और जनता की सेवा में लगे रहना उन्हें बाबा साहब,शाहूजी महाराज और माता सावित्री बाई की श्रेणी में ला खड़ा करता है।

प्रस्तुत पुस्तिका की रचना में उनके पी0 आर0 ओ0 के रूप में लंबे समय तक कार्य कर चुके बाबू राम केवल वर्मा, लखनऊ, श्री राम चंद्र वर्मा जनपद फैजाबाद, जय राम वर्मा बापू स्मारक कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य श्री राम अशीष वर्मा और विख्यात जन सेवक श्री दिनेश चौधरी साहब के द्वारा बहुत ही मूल्यवान सूचनाएं उपलब्ध कराई गई। इसके दो पाठों से पाठ सं. सात और आठ की रचना बाबू राम केवल वर्मा साहब के द्वारा की गयी है। वस्तुतः इन सूचनाओं के आधार पर ही यह रचना संभव हो सकी। पुस्तिका की रचना में प्रख्यात चिकित्सक डा अमिता वर्मा, एवं श्री अरविन्द कुमार वर्मा, ग्राम–अमेदा (बरवा बीठलपुर), पोस्ट–शादीपुर, टाण्डा विशेष प्रेरणास्रोत रहे हैं। पुस्तिका में समस्त छायांकन सुश्री जाहन्वी वर्मा के द्वारा तैयार किया गया है। विख्यात बौद्ध विद्वान श्री रामेश्वर पवन, डा मिंदर चौधरी के द्वारा पुस्तिका के सम्पादन और छायांकन में विशेष सहयोग रहा है। वस्तुतः इनके सहयोग के बिना यह कार्य संभव ही नहीं था। उक्त सहयोग के लिए इन महानुभावों को हृदयतल की गहराइयों से धन्यवाद और साधुवाद। पुस्तिका की समालोचना सादर आमंत्रित है। इससे हमें मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

लेखक
डॉ. डी.के. वर्मा

अभिमत

ईमानदारी का पर्याय माने जाने वाले बाबू जय राम वर्मा पर ''पूर्वांचल के गाँधी बाबू जय राम वर्मा'' के नाम से उनके जीवन दर्शन पर आधारित आदरणीय डॉ. डी. के.वर्मा जैसे सशक्त हस्ताक्षर द्वारा एक प्रेरणामयी पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है! पुस्तिका में बाबू जय राम वर्मा साहब के जीवन के उन पहलुओं को बहुत ही संजीदगी से अंकित किया गया है जिन पर आम तौर पर समाज और देश के लोगों का ध्यान नहीं जाता है। परिवार पर लगातार आ रही मुसीबतों को झेलते हुए पूरी ईमानदारी से आखिरी सांस तक समाज और देश के लिए कार्य करते रहे। ईमानदारी इतनी कि कुछ भी नहीं रोका अपने लिए सब कुछ दे दिया समाज और देश के कमजोर तबके को शिक्षा के माध्यम से।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि, यह पुस्तक अपने उद्देश्यों को पूरा करते हुए देश के लोगों में एक नवीन चेतना का संचार करेगी! सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का सशक्त आधार बनेगा, जिसकी आज आवश्यकता है! पुनः डॉ.डी. के.वर्मा कृत ''पूर्वांचल के महात्मा बाबू जयराम वर्मा'' के प्रकाशन पर मेरी ओर से हार्दिक बधाईयाँ और अनंत शुभकामनाएं!

आपका अपना
डॉ. गुलाब चंद 'कुसुम'
प्राचार्य
शासकीय लक्ष्मणेश्वर स्नातकोत्तर
महाविद्यालय खरौद,
जिला जांजगीर–चांपा छत्तीसगढ़

प्राक्कथन

बहुजन समाज आज जिन बौद्धिक चुनौतियों से रू ब रू है उनमें से एक यह है कि उसके पास अपने सामाजिक नायकों का जीवनवृत्त ही नहीं है जबकि नायकों की एक लंबी शृंखला है। लेकिन विडंबना यह है कि सारे नायक धूल धूसरित हो रहे हैं। उनके योगदानों की तो छोड़िये, जीवन और व्यक्तित्व तक की जानकारी लोगों को नहीं है। ऐसे में संघर्ष की कौन सी कहानी बँधेगी यह आसानी से समझी जा सकती है। यह जरूरी था कि अलग अलग लेखकों द्वारा एक एक व्यक्तित्व पर कई कई किताबें होनी चाहिए थी लेकिन नहीं है।

ऐसे ही बहुजन समाज के एक नायक थे बाबू जयराम वर्मा जो अंबेडकर नगर से 35 वर्षों से अधिक समय तक विधायक रहे थे। शिक्षा संस्थानों की स्थापना में उनका बेमिसाल योगदान रहा है। इस जिले को पचासों स्कूल कॉलेजों से समृद्ध बनाने में बाबू जयराम वर्मा की भूमिका को याद किये जाने की जरूरत है। उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र में और भी अनेक महत्वपूर्ण काम किये। वर्मा जी अधिक समय तक कांग्रेस में रहे थे और उत्तर प्रदेश में नब्बे के दशक में कांग्रेस की लुटिया डूब चुकी थी लिहाज़ा वर्मा जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी धूल पड़ती गई।

ऐसे लोगों में केवल जयराम वर्मा ही नहीं बल्कि दर्जनों लोग हैं जिनपर कुछ भी लिखा नहीं मिलता। लेकिन जाने माने सामाजिक चिंतक डॉ डी के वर्मा ने इस बात की अहद ली है कि ऐसे तमाम बहुजन नायकों के बारे में पुस्तक शृंखला प्रकाशित की जाय। यह अत्यंत आवश्यक और युगीन कार्य तो है बेहद श्रमसाध्य और विवेकपूर्ण काम भी है। यह वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए बहुत बड़ा काम है। डॉ वर्मा की सुचिंतित, प्रवाहपूर्ण और तार्किक शैली में लिखी ये किताबें लोगों को निश्चित ही पसंद आएंगी। ऐसा मेरा विश्वास है। इसके लिए डॉ वर्मा साधुवाद के पात्र हैं।

रामजी यादव
कथाकार, संपादक गाँव के लोग, वाराणसी

प्रकाशकीय

भारतीय इतिहास के आधुनिक कालखंड में बहुत ही कम विभूतियां रहीं हैं जिन्होंने पूरी ईमानदारी से काम किया और सत्ता में बने रहे। यह माना जाता है कि सत्ता में रह कर नेताओं पर भ्रष्टाचार की कालिख लग ही जाती है। पूर्वांचल के ऐसे ही व्यक्तित्व रहे हैं बाबू जय राम वर्मा जिन्होंने अपने व्यक्तित्व के बल पर 40 वर्षों तक प्रतिनिधित्व किया अपने क्षेत्र का प्रदेश के सर्वोच्च सदन में हमेशा चुनाव जीतकर। सम्पत्ति के नाम पर उन्होंने कुछ नहीं बनाया। जब वह लखनऊ में मंत्रियों के लिए आवंटित आवास में रहते थे तब भी राशन घर से ही जाया करता था।

पुस्तिका उन्हीं की यशगाथा है। इसको तैयार करने में वरिष्ठ साहित्यकार, लेखक डॉ.डी.के. वर्मा साहब के द्वारा कड़ी मेहनत की गई। टूटी हुई कड़ियों को जोड़ कर लोगों का साक्षात्कार कर बहुत सुंदर कृति तैयार की गई है।

बुद्ध अम्बेडकर कल्याण एसोसिएशन उत्तर प्रदेश (रजि.) प्रकाशन द्वारा ''पूर्वांचल के गांधी बाबू जयराम वर्मा'' प्रकाशित पुस्तक के लेखक एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. डी.के. वर्मा की पुस्तिका के लिए भूरि–भूरि सराहना एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इस कृति समाज के बुद्धिजीवी पाठकों तक पहुंचाने में सफल हो सका हूँ इस बात का निर्णय सुधी पाठक करेंगे। सम्मानित पाठकों की प्रतिक्रिया का सम्मान करुँगा।

भवतु सब्ब मंगलम

ज्ञानप्रकाश जख्मी
प्रकाशक
मो. 81818 19657

दो शब्द

हमारे देश के धार्मिक कानून जो सभी हिंदू धर्म ग्रंथों में वर्णित हैं हमारी विषमतावादी व्यवस्था की आन बान शान और पहचान माने गए हैं इसे हम वर्ण व्यवस्था के नाम से जानते और मानते हैं तदनुसार समाज में चार वर्ण हैं। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र। अपने वर्ण के अनुसार इन सभी का कार्य निर्धारित किया गया था। वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण सबसे ऊंचे पायदान पर आसीन थे। पठन पाठन, यज्ञ पुरोहित का कार्य करना और करवाना इनका कार्य निर्धारित किया गया था। परंपरागत रूप से यह संवर्ग ही राजा का सलाहकार भी होता था। क्षत्रिय दूसरे पायदान पर आते हैं। इस वर्ण का कार्य ही था पढ़ना, शस्त्र धारण करना, शस्त्र विद्या सीखना और देश की रक्षा करना, यह शस्त्रोपजीवी वर्ग था। तीसरे नंबर पर वैश्य संवर्ग था जिसका कार्य था पढ़ना और वाणिज्य व्यापार करना। इसके बाद जो चौथा वर्ण हुआ करता था उसे शूद्र कहा जाता था, उसका कार्य था ऊपर के तीन वर्णों की सेवा करना। उसे कानूनन पढ़ने लिखने का अधिकार नहीं था। यही कानून हिंदू सभ्यता की पहिचान आज भी है। इस वर्ण व्यवस्था की स्थापना और रक्षा ही हिंदू राजाओं का पहला कर्तव्य हुआ करता था। यही कारण है कि आज भी हमारे देश के गांवों में ओबीसी जातियां खेती, पशुपालन, मछलीपालन और कृषि से अनुषंगी कार्यों में लगी हुई है। शूद्रों का दूसरा वर्ग आज की तारीख में एससी एसटी के नाम से जाना जाता है यह अस्पृश्य वर्ग है। किसी का इससे छू जाना भी हमारे धर्म ग्रंथों में पाप माना गया है। जब इसके छू जाने से पाप हो जाता है तो क्या

पढ़ना और क्या पढ़ाना अर्थात यह संवर्ग सदियों से पठन पाठन से कानून बनाकर वंचित कर दिया गया था। सदियों तक चली इस वंचना के चलते यह वर्ग पठन पाठन से अलग हो गया और पिछड़ेपन तथा सामाजिक सांस्कृतिक गरीबी का शिकार हो गया। शूद्रों की संख्या सबसे अधिक थी। आज भी वंचित, उपेक्षित वर्ग की संख्या सभी गांवों में कुल जनसंख्या का 85 प्रतिशत है। आज भी सभी गांवों में कुल आबादी का 60 प्रतिशत ओबीसी समाज है और 25 प्रतिशत एससीएसटी समाज है। इस सामाजिक वंचना को हमारे पुरखों ने देखा और अंग्रेज शासकों से अनुरोध कर यह कानून बनवाया कि देश की संपत्ति में इन वर्गों को हिस्सा दिया जाय। इस दिशा में पहला कार्य यह हो सकता था कि आबादी के अनुपात में इन्हें राजकीय सेवाओं में आरक्षण दिया जाता। इसकी शुरुआत वर्ष 1902 में शाहूजी महाराज ने कोल्हापुर से कर भी दी थी। शासन–प्रशासन व धन, धरती, व्यापार में भागीदारी (आरक्षण) प्राप्त करने पर ही यह समाज देश के अन्य विकसित समाजों जिसमें ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य आते हैं की बराबरी कर पायेगा।

हमारे पुरखों शाहूजी महाराज, माता सावित्रीबाई फुले, राष्ट्रपिता ज्योतिराव फुले और बाबा साहब डा भीम राव अंबेडकर के अथक प्रायासों से संविधान में कमजोरों के लिए राजकीय सेवाओं में आरक्षण (प्रतिनिधत्व) की व्यवस्था की गई। संविधान के स्तर से समाज के पिछड़े वर्गों को राजकीय सेवाओं में 27 प्रतिशत और एससीएसटी समाज को 22.5 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। यह व्यवस्था आज भी लागू है। यदि 100 अधिकारियों या कर्मचारियों की भर्ती होती है चाहे वह अफसर हो या बाबू या चपरासी उसमें 27 अभ्यर्थी ओबीसी समाज से और 22.5 प्रतिशत अभ्यर्थी एससीएसटी समाज से लिए जाने होते हैं चाहे उन्होंने कितने भी कम अंक क्यों न पाए हों? यह तथ्य थोड़ा अजीब लग सकता है। परंतु यह इसलिए है कि विज्ञापित पद के लिए अनिवार्य योग्यता तो वह धारित ही करता है, तब ही

तो उसे परीक्षा या चयन प्रक्रिया में स्थान मिला। जो अनिवार्य योग्यता विज्ञापित पद के लिए विहित की गई है उसे वह धारित करता है। अतः यदि प्रतियोगी परीक्षा में उसे शून्य अंक भी प्राप्त होते हैं तो भी उसे चयन सूची में स्थान मिलना चाहिए।

इस नियम के तहत हमें सबसे पहले बिना कोई आरक्षण देखे अनारक्षित या सामान्य सीटों के लिए सामान्य मेरिट लिस्ट बनानी चाहिए और सभी सामान्य सीटों पर ओवरऑल मेरिट के आधार पर भर्ती की जानी चाहिए। बिना किसी भेद भाव के बिना कोई जाति या संवर्ग को देखे हुए। सामान्य सीटों के भर जाने के बाद आरक्षित संवर्गों की मेरिट लिस्ट बनाई जानी चाहिए। अर्थात सामान्य मेरिट लिस्ट में अंतिम स्थान पर खड़े अभ्यर्थी से कम अंक से आरक्षित वर्ग की मेरिट लिस्ट प्रारंभ होनी चाहिए। इस सूची में केवल आरक्षित संवर्ग के अभ्यर्थी लिए जाने चाहिए।

उदाहरण के लिए यदि 100 सीटों पर भर्ती होनी है तो उसमें मोटा मोटा 50 सीटें आरक्षित होंगी और लगभग 50 सीटें अनारक्षित होंगी। परीक्षा या अंक के आधार पर मेरिट बनाते समय सबसे पहले ओवरऑल मेरिट सूची बनाई जानी चाहिए। जिसमें सभी अभ्यर्थी चाहे वह किसी भी जाति वर्ग संवर्ग के हों उनको स्थान मिलना चाहिए। चूंकि यह सबके लिए है सामान्य सीट है। इन सीटों पर चयन कर लेने के बाद आरक्षित वर्ग की मेरिट सूची बनाई जानी चाहिए। जिससे आरक्षित वर्ग के तेज अभ्यर्थी सामान्य सीटों पर चयन पा सकें। यही संविधान की आत्मा भी है और इसी से यह सुनिश्चित हो सकता है कि आरक्षण का अनुपालन सुनिश्चित किया गया है और कम से कम 27 या 22.5 प्रतिशत सीटें आरक्षित वर्ग को दी गई हैं।

पर वास्तविकता इससे अलग है। यहां सबसे पहले आरक्षित संवर्ग की मेरिट लिस्ट बना ली जाती है और इसके आधार पर चयन कर लिया जाता है। और उसके बाद सामान्य या अनारक्षित सीटों के लिए मेरिट लिस्ट बनाई जाती है। इस सामान्य या अनारक्षित सूची में आरक्षित संवर्ग को

राजकीय सेवाओं में आरक्षण के वर्तमान नियम (प्रति आरक्षण, गलत एवं अवैधानिक)

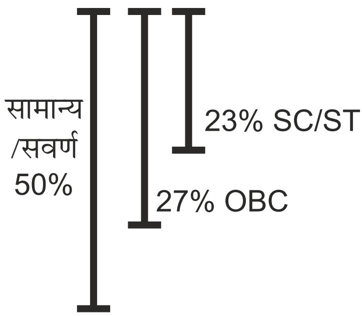

1- सर्व प्रथम OBC की 27 प्रतिशत सीटें भरी जाती है। OBC संवर्ग में अधिक अंक या गुणांक पाने वाले अभ्यर्थी लिए जाते हैं।

2-इसी तरह SC/ST की 22.5 प्रतिशत सीटें भरी जाती है। SC/ST संवर्ग में सर्वाधिक अंक या गुणांक प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी लिए जाते हैं।

3-अब शेष 55.5 प्रतिशत सीटों पर केवल सवर्णो की भर्ती कर ली जाती है।

उदाहरण

कुल सीटे 11

कुल प्राप्तांक - 100

1-27% OBC सूची, 3 अभ्यर्थी

क्र.सं.	नाम	संवर्ग	प्राप्तांक
1.	अमर	OBC	98
2.	अजय	OBC	97
11.	अखिल	OBC	78

2-22.5% SC/ST सूची, 2 अभ्यर्थी

क्र.सं.	नाम	संवर्ग	प्राप्तांक
6.	रमेश	SC	93
7.	राजेश	SC	92

3-55.5% सामान्य सूची, 6 अभ्यर्थी

क्र.सं.	नाम	संवर्ग	प्राप्तांक
3.	मोहन	GEN	96
4.	मनोज	GEN	95
5.	दिनेश	GEN	94
9.	महेश	GEN	85
10.	नीरज	GEN	80
14.	विनय	GEN	75

ऐसे में OBC की उच्चतम मेरिट = 98

SC की उच्चतम मेरिट = 93

सामान्य की उच्चतम मेरिट = 96

कुल चयनित अभ्यर्थियों की संख्या

OBC = 3, SC = 2, GEN = 6

Total = 11

मेरिट लिस्ट उदाहरण

क्र.सं.	नाम	संवर्ग	प्राप्तांक
1.	अमर	OBC	98
2.	अजय	OBC	97
3.	मोहन	GEN	96
4.	मनोज	GEN	95
5.	दिनेश	GEN	94
6.	रमेश	SC	93
7.	राजेश	SC	92
8.	सुरेश	SC	90
9.	महेश	GEN	85
10.	नीरज	GEN	80
11.	अखिल	OBC	78
12.	अमन	OBC	77
13.	अनय	OBC	76
14.	विनय	GEN	75
15.	विनोद	GEN	74
16.	निवेश	GEN	73
17.	महीप	SC	71
18.	अदन	SC	68

यह स्थिति अक्सर समाचार पत्रों से प्राप्त होती है। प्रस्तुत उदाहरण में 2 OBC और 1 SC सीट पर सवर्णो ने कब्जा कर लिया। इस तरह से अमन ओ.बी.सी. (77) अंक और सुरेश एस.सी. (90) अंक प्राप्त कर प्रतियोगिता से बाहर हो और उससे कम विनय सा. (75) अंक प्राप्त कर चयनित हो गया।

राजकीय सेवाओं में आरक्षण के नियम (वैधानिक)

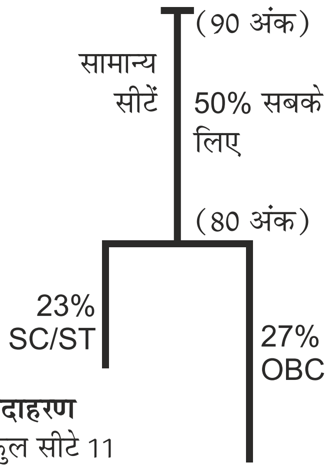

1- सर्व प्रथम अनारक्षित सीटें भी जानी चाहिए। सामान्य या Open मेरिट से, इसमें सभी शामिल हों। (ओ.बी.सी., एस.सी., एस.टी. मिलाकर)

2- इसके उपरान्त OBC तथा SC/ST की सीटें भरी जांय। इसमें वह अभ्यर्थी लिए जाते हैं, जिनके अंक सामान्य अनारक्षित सूची की **Cutt off** से कम हो यहाँ सामान्य श्रेणी भी लोवर कट ऑफ 93 है।

उदाहरण

कुल सीटे 11

कुल प्राप्तांक - 100

1-सामान्य/अनारक्षित 6 सीटें 55.5%→

2- OBC i.e 27% 3 सीटें

3- SC/ST i.e 22.5% 2 सीटें

कुल चयनित अभ्यर्थियों की संख्या-

OBC = 3

SC = 2

GEN = 6

Total = 11

मेरिट लिस्ट उदाहरण

क्र.सं.	नाम	संवर्ग	प्राप्तांक
1.	अमर	OBC	98
2.	अजय	OBC	97
3.	मोहन	GEN	96
4.	मनोज	GEN	95
5.	दिनेश	GEN	94
6.	रमेश	SC	93
7.	राजेश	SC	92
8.	सुरेश	SC	90
9.	महेश	GEN	85
10.	नीरज	GEN	80
11.	अखिल	OBC	78
12.	अमन	OBC	77
13.	अनय	OBC	76
14.	विनय	GEN	75
15.	विनोद	GEN	74
16.	निवेश	GEN	73
17.	महीप	SC	71
18.	अदन	SC	68

स्थान नहीं मिलता है। इस सूची में कुछ आरक्षित संवर्ग के अभ्यर्थी स्थान पा जाते हैं जिन्होंने अपनी जाति में सामान्य जाति दर्शाया होता है। इस तरह से 50 प्रतिशत सीटें सुरक्षित हो जाती हैं सवर्ण समाज के लिए बिना किसी कानून के और आरक्षित संवर्ग सिमट कर रह जाता है मात्र अपने संवर्ग में। अर्थात् आरक्षण था पिछड़ों का और आरक्षण हो गया सवर्णों का। यहां यह सुनिश्चित कर लिया जाता है कि कम से कम 50 प्रतिशत सीटें सुरक्षित हो जाय सवर्ण समाज के लिए।

यह स्थिति है राजकीय सेवाओं में आरक्षण की, निजी क्षेत्र की बात तो छोड़ ही दिया जाय। पर हमारे समाज को इस धोखाधड़ी की जानकारी नहीं है। होगी भी तो कैसे सारे अखबार न्यूज चैनल मीडिया कोई भी नहीं बोलता इस मुद्दे पर कहीं प्रकाशन नहीं होता। जानकारी कैसे होगी? हां जानकारी है उन बच्चों को जो तैयारी कर रहे हैं प्रतियोगी परीक्षाओं की उन्हें पता है परंतु उनकी बात उनके अपने ही घर में उनकी माताएं नहीं सुनतीं। ऐसा नहीं है कि वह मूर्ख हैं। उन्हें जानकारी नहीं है क्योंकि कोई नहीं बोलता। वैसे भी घर में बच्चों की बात अधिकांशतः नहीं मानी जाती। सवाल यह है कोई क्यों नहीं बोलता। उत्तर स्पष्ट है जिनके पास आवाज है, अखबार है, मीडिया है वह आरक्षण के धुर विरोधी हैं। वह तो वर्तमान बहुजन आरक्षण समाप्त करना चाहते हैं तो वह क्यों बोलेंगे? वह इतने चालाक हैं कि वह आलोचना भी नहीं करते कि कहीं आलोचना करने के कारण ही लोगों को यह पता न चल जाय कि आरक्षण की कोई व्यवस्था भी है।

परंतु इतना तय है कि जैसे भी हो समाज की माताओं बहनों को यह पता चल जाय कि जिनके कहने पर ही वह सारे मांगलिक कार्य करती हैं अपने बच्चों के सुखद भविष्य के लिए,वास्तव में वही दुश्मन हैं उनके बच्चों के भविष्य के और इन्ही के कारण बच्चो को नौकरी नहीं मिलेगी, तो एक बार पिता बर्दाश्त कर सकता है परंतु माता बर्दाश्त नहीं कर सकेगी। यदि

यह प्रश्न किया जाए कि माता और पिता में सबसे अधिक प्यार कौन करता है बच्चों से! सबका एक ही जवाब होगा माता। भले एक प्रतिशत ही हो लेकिन माँ का प्यार अधिक होता है पिता से। माताओं को जानकारी नहीं है कि उनके बच्चों के आरक्षण का दुश्मन कौन है? यदि उन्हें पता चल जाय तो किसी को कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी और शोषण, पक्षपात्र व विषमता के दुर्ग को ढहाने में वे कारगर सहयोगी बन जाएंगी।

इस आरक्षण की शुरुआत की थी हमारे देश के कुर्मी समाज के राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज ने उनका बनाया हुआ यह कानून इतना प्रभावशाली था कि भारतीय संविधान में वंचित वर्गों के आरक्षण का आधार बना और आज भी लागू है। परंतु यह सब तो तब होगा जब समाज के सभी बच्चे पढ़ पाएंगे । इसके लिए आवश्यक नहीं अनिवार्य है कि प्रत्येक गांव में विद्यालय हों शाहू जी महाराज महाराज राजा थे उन्होंने कानून बनाकर आदेश कर दिया कि हर एक गांव में विद्यालय खोला जाय वह भी मंदिरों की भूमि का अधिग्रहण करके । यही कार्य बाबू जय राम वर्मा साहब ने किया उत्तर प्रदेश के फैजाबाद प्रखंड में इस कार्य में उन्हें किन विरोधों का सामना करना पड़ा किन्होंने उनके इस कार्य का विरोध किया और कैसे उन्होंने विजय पाई अपने विरोधियों पर इसी की कहानी है प्रस्तुत पुस्तिका में।

आशा है पुस्तिका से देश के बहुसंख्यक वर्ग को देश की मुख्यधारा की राजनीति और धर्म को समझने में सहायता मिलेगी ।

रामेश्वर पवन
एडवोकेट / साहित्यकार
बहराइच
मो. 7985464094

बाबू जयराम वर्मा

(04 फरवरी 1904 – 13 जनवरी 1987)

बाबू जय राम वर्मा का जीवन वृत्त

4 फरवरी वर्ष 1904	जन्म बड़ागांव इब्राहिमपुर केदार नगर टांडा अंबेडकरनगर।
1932	इलाहाबाद वि.वि. से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।
1941	राम बली नेशनल हाई स्कूल के प्रधानाचार्य पद से त्यागपत्र दे कर स्वाधीनता संग्राम में उतरे।
1944	सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण 3 माह 21 दिन जेल में निरूद्ध रहे।
1945	राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के कारण पुनः 1 वर्ष और 3 माह फैजाबाद और सेंट्रल जेल वाराणसी में निरूद्ध रहे ।
1945	जीवन संगिनी का निधन
1946	पहली विधान सभा के लिए बाराबंकी से निर्विरोध निर्वाचित।
1952	अकबरपुर से विधायक चुने गए।
1957	टाण्डा विधानसभा से सदन के लिए निर्वाचत हुए।
1962	उत्तर प्रदेश सरकार में उपमंत्री वित्त और न्याय रहे।
1967	अकबरपुर से दूसरी बार विधायक निर्वाचित हुए।
1959	उत्तर प्रदेश सरकार में उपमंत्री बने।
01अप्रैल 1967	कांग्रेस दल छोड़कर जन कांग्रेस का गठन।
1967	उत्तर प्रदेश सरकार में कृषि, सामुदायिक विकास, पंचायती राज, गन्ना विकास और चीन मिल्स के मंत्री बने भारतीय क्रांति दल (बी के डी) के अध्यक्ष बने

1970	उपचुनाव में टांडा विधान सभा क्षेत्र से दूसरी बार निर्वाचित हुए और उत्तर प्रदेश सरकार में गन्ना विकास और चीन मिल्स के कैबिनेट मंत्री बने।
1974	भारतीय कांग्रेस पार्टी में वापसी।
1976	नेशनल सीड कार्पोरेशन के अध्यक्ष बने।
1980	फैजाबाद संसदीय क्षेत्र से सांसद चुने गए।
1985	टांडा विधान सभा क्षेत्र से तीसरी बार चुने गए, विधान सभा के प्रोटेम स्पीकर नियुक्त हुए और इसी काल में जीवन के अंतिम समय तक नियोजन मंत्री बने रहे।
1986	सार्वजनिक उपक्रम और संयुक्त निगम समिति के अध्यक्ष बने।
13 जनवरी 1987	महाप्रयाण।

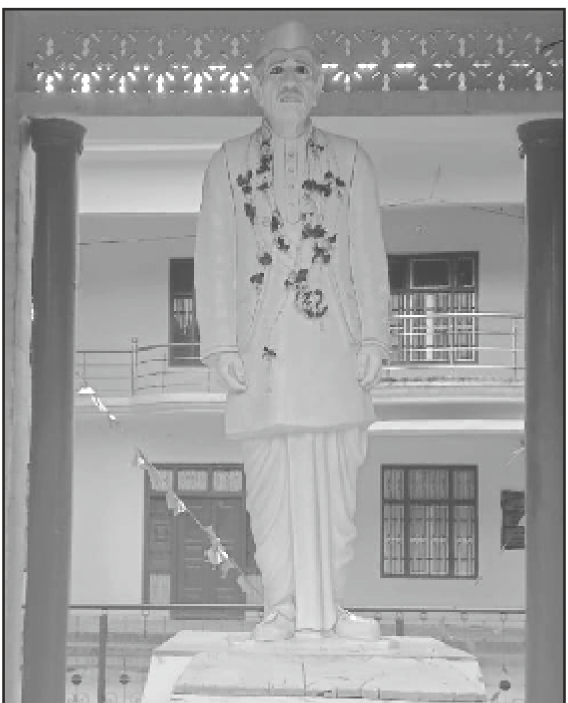

चित्र सं. 01 बाबू जयराम वर्मा की संगमरमर की मूर्ति

वंश वृक्ष

पिता ननकू चौधरी, माता नेपाली देवी

- जयराम वर्मा (प्राणा देवी)
  - कमला पति (पुत्र)
    - राकेश वर्मा
      - पल्लवी (पुत्रियाँ)
      - प्रेरणा (पुत्रियाँ)
    - उषा वर्मा (पुत्री)
  - सावित्री देवी (पुत्री)
- जग मोहन (फुलरा देवी) उर्फ मोटको

पूर्वांचल के गाँधी

देशप्रेम ईमानदारी सत्यनिष्ठा की प्रतिमूर्ति बाबू जय राम वर्मा एक ऐसी शख्शियत हैं जिन्हें ईमानदारी के पर्याय के रूप में माना और जाना जाता है पूर्वी उत्तर प्रदेश में। बाबूजी का जीवन सादगी और ईमानदारी का दूसरा नाम था। कभी गलत का समर्थन न करना। गलत लोगों से किसी तरह का सहयोग न लेना और उसके बाद भी 38 वर्ष से अधिक समय तक सत्ता में मजबूती से कायम रहना आज की राजनीति के लिए उदाहरण है। मान्यवर कांशीराम से पहले बाबूजी ने यह उदाहरण प्रस्तुत कर दिया कि ईमानदारी से भी राजनीति की जा सकती है।

बाबूजी समाज के कमजोर वर्गों की वंचना से बहुत दुखी रहते थे वह जानते थे कि वर्ण व्यवस्था के घृणित कुचक्र से केवल शिक्षा और विशेष रूप से सामाजिक शिक्षा ही निजात दिला सकती है। इस समय और आज का सामाजिक संजाल इस तरह का है या यों कहें ब्राह्मणवाद समाज के दिलो दिमाग पर इस कदर हावी है कि उसका सीधा विरोध आत्महत्या के समान है। बाबूजी यह भली प्रकार जानते थे और समझते भी थे इसलिए उन्होने शिक्षा पर विशेष बल दिया और पचासों विद्यालय खुलवाए। उनकी प्रेरणा से आज उनके क्षेत्र में लगभग हर न्याय पंचायत में विद्यालय हैं और उनका गृह जनपद अंबेडकर नगर शिक्षा और सामाजिक विकास के क्षेत्र में प्रदेश में सर्वोपरि है।

चित्र सं. 02 बाबू जयराम वर्मा के पैतृक निवास वर्ष 2025

शिक्षा के उद्धारक

बाबूजी ने बाराबंकी, अकबरपुर, फैजाबाद और टांडा से प्रदेश और देश का प्रतिनिधित्व किया। उस समय यह क्षेत्र सामाजिक और शैक्षिक के साथ साथ आर्थिक रूप से भी पिछड़े क्षेत्रों में माना जाता था। यदि हम तुलना करें प्रदेश के अन्य क्षेत्रों से तो आज भी स्पष्ट अंतर दिखाई पड़ जाता है। वर्ण व्यवस्था की बेड़ियों को तोड़ने के लिए शाहूजी महाराज की तरह ही बाबूजी ने भी समाज के सक्षम लोगों को प्रोत्साहित किया कि वह विद्यालय खोलें और विद्यालय खोलने में सहयोग करें। उनके प्रयास से जिन विद्यालयों की स्थापना हुई उनका विवरण निम्नवत है।

1. राम बली नेशनल इंटर कॉलेज गोसाईगंज फैजाबाद 1940,
2. बापू स्मारक इंटर कॉलेज नाउसांडा केदारनगर, अंबेडकरनगर
3. कन्या जू0 हा0 स्कूल जयराम नगर केदारनगर, अंबेडकरनगर

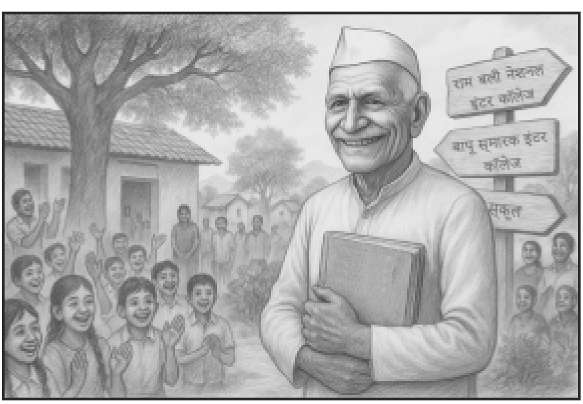

चित्र सं. 03

4. सर्वोदय इंटर कॉलेज, कोटवामुहम्मदपुर अकबरपुर अंबेडकरनगर
5. जनता इंटर कॉलेज उतरेथू, अंबेडकरनगर
6. सरदार पटेल स्मारक इंटर कालेज लारपुर अकबरपुर अंबेडकरनगर
7. गयादीन बालिका इंटर कॉलेज लारपुर अकबरपुर अंबेडकरनगर,
8. राम अवध जनता इंटर कॉलेज बरियावन अंबेडकर नगर ,
9. शास्त्री औद्योगिक इंटर कालेज कासिमपुर अकबरपुर अंबेडकरनगर,
10. रांगेय राघव इंटर कॉलेज हंसवर टांडा अंबेडकर नगर,
11. खेमराज इंटर कॉलेज खेमापुर अंबेडकरनगर ,
12. जय राम वर्मा जनता इंटर कॉलेज रामनगर अंबेडकरनगर,
13. जनता इंटर कॉलेज पकड़ी भोजपुर अंबेडकर नगर।

बाबूजी मूलतः गणित के प्राध्यापक थे टी एन हावर्ड कालेज टांडा में। वहीं से उन्होंने सामाजिक राजनीति का आंदोलन शुरू किया जो स्वतंत्रता संघर्ष के आंदोलन के साथ साथ चलता रहा। बाबूजी दर्जनों विद्यालयों के अध्यक्ष रहे। उनकी साफ सुथरी छवि के कारण ही विद्यालय प्रबंधन उन्हें अपनी विद्वत परिषद की अध्यक्षता करवाने के लिए लालायित रहता था। निश्चित रूप से शिक्षा व्यवस्था की इनबिल्ट कानूनों के तहत बहुसंख्य वर्ग को शिक्षा का अधिकार नहीं था। धार्मिक कानूनो के अनुसार शूद्र समाज जो खेती किसानी में लगा हुआ था के लिए शिक्षा विहित ही नहीं थी। बाबूजी ने इस क्रूर सांस्कृतिक मजाक को समझा। वह भली प्रकार समझते थे कि **समाज के शैक्षिक विकास के लिए समाज के सक्षम वर्ग को आगे लाना पड़ेगा।** तत्कालीन परिस्थितियों में खेतिहर समाज शिक्षा और विद्याध्यन को अपना काम मानता ही नहीं था। कमोबेश यही स्थिति प्रदेश के अन्य क्षेत्रों की आज भी है जहां खेतिहर समाज आज भी अपने मानवीय अधिकारों को ही नहीं जानता। ऐसी परिस्थिति में बाबूजी ने अपने पूरा जीवन लगा दिया समाज के सबसे कमजोर हिस्से तक शिक्षा पहुंचाने के लिए। बाबूजी के प्रयासों का प्रतिफल हमे आज दिखाई

पड़ता है जब हम देखते हैं कि अंबेडकरनगर का कोई ऐसा गांव नहीं होगा जहां एक दो सरकारी कर्मचारी या अधिकारी न हों और यहां की बहने बेटियां अच्छी तरह शिक्षित हैं। इस क्षेत्र में विद्यालयों की भरमार है। जब हम इस जनपद की तुलना महाराजगंज (गोरखपुर) से करते हैं तो बाबूजी का संघर्ष और उनकी दूर दृष्टि दिखाई पड़ती है। जनपद महाराजगंज में पिछले 25 वर्षों से पिछड़े समाज के सांसद सत्तासीन है संप्रति वह मंत्री भी बन गए हैं परंतु उनके क्षेत्र में अभी भी खेतिहर समाजों के घर पर पुरोहित हाथी पर बैठकर यज्ञ करने के लिए बुलाए जाते हैं और समाज की बेटियां सिर पर कलश रखकर लाइन लगाकर स्वागत करती हैं।

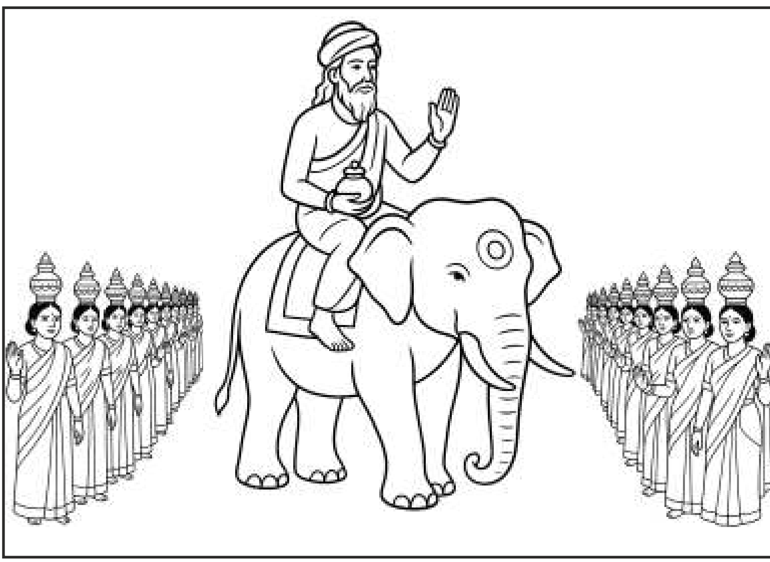

चित्र सं. 04

कृषि का विकास और बाबू जयराम वर्मा

हमारा देश आज भी कृषि प्रधान ही है कारण जीडीपी जहां से भी आए लेकिन अभी भी देश का सबसे बड़ा हिस्सा खेती से ही अपना जीवन यापन करता है। यही देश के पिछड़ेपन का कारण भी है। परंतु समाज को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए कृषि का विकास एकमात्र विकल्प था। इसी के चलते उन्होंने अपने क्षेत्र में कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए हर स्तर पर आवाज उठाई।

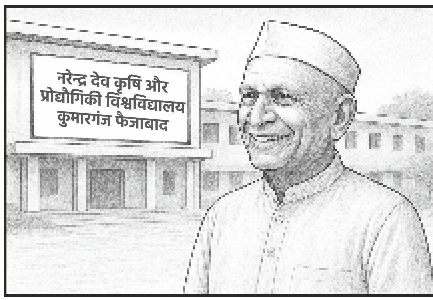

चित्र सं. 05
नरेंद्र देव कृषि और प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय की स्थापना

कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना

बाबूजी जमीनी नेता थे उनकी बात को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी भी अस्वीकार नहीं कर पातीं थीं। एक नहीं कई बार उन्होंने अपने क्षेत्र में कृषि के विकास के लिए कृषि विश्वविद्यालय की मांग की। उनका कहना था कि युवाओं को कृषि की शिक्षा देकर उन्हें कृषि कार्य में ही लगाया जाय। जिससे वह कृषि में नई तकनीकों को बढ़ावा मिलेगा और क्षेत्र का विकास होगा। उनके अथक प्रयासों से कुमारगंज में कृषि विश्वविद्यालय की नीव रखी गई। वर्ण व्यवस्था की सनातनी जकड़न और घोर स्वर्थांधता के चलते विश्वविद्यालय पर नरेंद्र देव प्रभावी हो गए, बाबूजी बहुत लंबे समय तक उसकी विद्वत परिषद के अध्यक्ष बने रहे।

बाबूजी के अंदर समाज के प्रति गहरी संवेदना थी इसके चलते वह कोई भी कुर्बानी देने के लिए तैयार रहते थे। पद के पीछे वह कभी नहीं

पड़े। यही कारण था कि उन्हें 38 साल से अधिक समय तक समाज अपने नेता चुनता रहा।

नहरों का विकास

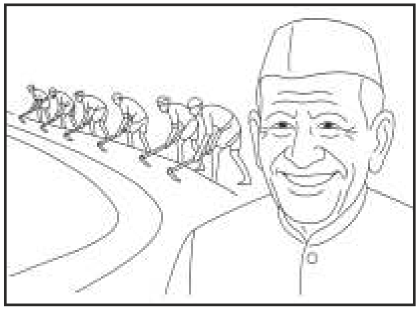

चित्र सं. 06 प्रथम पंच वर्षीय योजना में ही नहरों का विकास

जनपद अंबेडकर नगर में प्रथम पंचवर्षीय योजना में ही नहरें आ गई थी। बाबूजी कृषि के विकास के लिए हमेशा चिंतित रहते थे। उन्होंने अपनी पूरी ताकत झोंक दी कि सरयू नहर परियोजना उनके क्षेत्र से हो कर जाय। बाबूजी की ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ छवि के कारण पार्टी का प्रबंधन उन्हें मना नहीं कर पाता था।

उस समय नलकूपों का उतना विकास नहीं हो पाया था। तकनीकी आज की तरह की नहीं थी। अतः नहरें ही सिंचाई का मुख्य साधन हुआ करती थीं। कृषि का विकास नहरों पर ही निर्भर था। इसी को देखते हुए बाबूजी ने अपने क्षेत्र में नहरों के विकास पर बल दिया।

कृषि के विकास के लिए सरकार की ओर से कई बार उन्होंने विदेश यात्रा की। वह मशीनीकरण का समय नहीं था। जब बाबूजी कहते कि अमेरिका में मशीनों से खेतों की जुताई होती है तो किसी को विश्वास नहीं होता था। बाबूजी उन्नत बीजों और रासायनिक खादों पर अधिक जोर देते थे जिससे मजदूरों को रोजगार भी मिलता रहे। वह हरित क्रांति का समय था और बाबूजी हाई यील्डिंग वेराइटीज को लाने के लिए हमेशा प्रयासरत रहते थे।

चित्र सं. 07 हरित क्रांति

औद्योगीकरण : स्पिनिंग मिल, थर्मल पावर प्रोजेक्ट और विकसित गांधी आश्रम

बाबूजी भविष्यदृष्टा थे वह समझते थे कि जो भी हो केवल खेती से देश और समाज का विकास नहीं हो सकता। परंतु कृषि हमारे लिए इस कदर अपरिहार्य है कि इसे छोड़ना अगले 30–40 सालों तक संभव नहीं हो सकेगा। उन्हें शाहूजी महाराज का आदेश याद था जो उन्होंने 19 अप्रैल 1919 में कानपुर में दिया था।

''पुरखों के व्यवसाय से लिपटे मत रहो ,अपनी भूख पर काबू रखो, जैसे भी हो कृषि से बाहर निकलो, लश्कर में भर्ती हो जाओ, बच्चों को पढ़ने से मत रोको उन्हें खूब पढ़ाओ सरकारी आफिसों में नौकरी पकड़ो और अपना धन मंदिरों में बर्बाद मत करो।''

मरैला स्पिनिंग मिल्स की स्थापना

शाहूजी महाराज के इसी आदेश के तहत उन्होंने वर्ष 1975 में मरैला नामक गांव में स्पिनिंग मिल की स्थापना कराई, वर्ष 1975 में ही टांडा में थर्मल पावर प्लांट लगवाया और गांधी आश्रम की स्थापना की। यह तो सर्वविदित है कि बाबूजी की ईमानदारी से तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी कितना प्रभावित थीं। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि स्पिनिंग मिल उनके क्षेत्र में लगाई जाय। उन्होंने अनुरोध किया कि थर्मल पावर प्लांट टांडा में

चित्र सं. 08

चित्र सं. 09

स्थापित किया जाय। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी तत्काल मान गई इसलिए कि बाबूजी ईमानदार नेता हैं इनके रहते भ्रष्टाचार नहीं होगा और यह स्थापनाएं भली प्रकार चल सकेंगी और हुआ भी यही, उनके द्वारा स्थापित तीनों स्थापनाएं स्पिनिंग मिल को छोड़कर अभी भी देश में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। इसमें थर्मल पावर प्लांट बहुत बड़ी परियोजना है। यह पूर्वांचल के विकास का द्वार खोलती है। यहां का गांधी आश्रम देश के सबसे विकसित गांधी आश्रमों में से एक है। यहां दैनिक उपयोग में आने वाली लगभग हर वस्तु का उत्पादन होता था। बहुत लंबे समय तक यह गांधी आश्रम बाबूजी का अस्थाई कार्यालय बना रहा। आज भी अकबरपुर का गांधी आश्रम केवल वस्त्रों ही नहीं वरन दैनिक उपभोग की तमाम वस्तुओं का उत्पादन करता है। आज भी जब गुणवत्ता विशेष रूप से गर्म कपड़ों और नेताओं के ड्रेस की बात आती है तो अकबरपुर का गांधी आश्रम वहां के लोगों की पहली प्राथमिकता होती है।

सरयू एक्सप्रेस

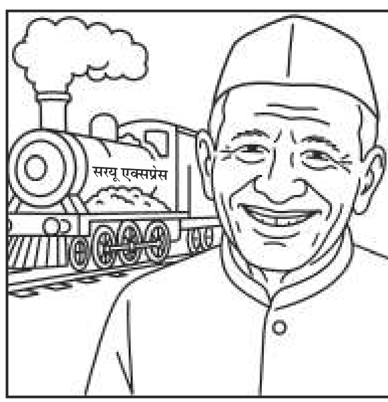

चित्र सं. 10

फैजाबाद के लोगों ने बाबूजी से एक बार शिकायत की कि वहां से इलाहाबाद जाने के लिए कोई एक्सप्रेस रेलगाड़ी नहीं है। उच्च न्यायालय जाने में बहुत समस्या होती है। वह समय था जब आज की तरह हाई वेज नहीं थे सड़कें बहुत खराब और कमजोर दशा में थीं। अतः रेल एक सुलभ और सुगम साधन हुआ करता था। बाबूजी की सलाह पर सरयू एक्सप्रेस नामक गाड़ी चलाई गई जो आज भी फैजाबाद से इलाहाबाद तक चल रही है।

जन्म और बाल्यकाल

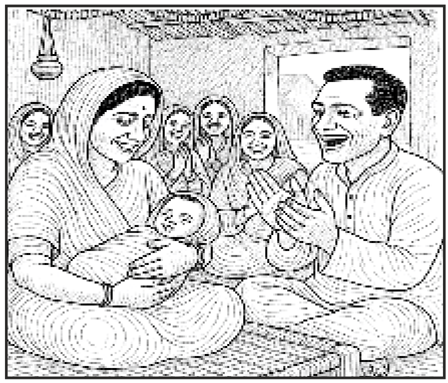
चित्र सं. 11

बाबूजी के बचपन के समय हमें देश की स्थिति बहुत विरल थी। जनसंख्या घनत्व बहुत कम था सड़के नहीं थी। जिला मुख्यालय भी पक्की सड़कों से पूरी तरह नहीं जुड़ पाए थे। शिक्षा जगत में गुरुकुल पद्धति अपने जनक वर्ण व्यवस्था के साथ पूरी कठोरता के साथ संचालित थी। साफ साफ कहें तो पढ़ने लिखने का अधिकार ही नहीं था सभी को। यह साफ साफ कहा जाता था क्या करेगा पढ़ लिख कर ,करना तो खेती किसानी ही है। यह हमारा सौभाग्य था कि अपना प्रदेश आजादी से पहले अंग्रेजों के सीधे नियंत्रण में था तिस पर भी सार्वभौम शिक्षा अभी तक सार्वभौम नहीं हो पाई थी। कारण, कानून बनने के बाद भी उसके अनुपालनकर्ता सार्वभौम शिक्षा के पक्ष में नहीं थे। मंदिरों में इस समय भी अथाह दौलत थी और आज भी है परंतु वह भोजन कराने और बहुत हो गया तो बेटियों के विवाह के काम आती है न कि शिक्षा देने के लिए। अन्य प्रांत जो देशी राजाओं के नियंत्रण में थे उनकी दशा क्या रही होगी जहां वर्ण व्यवस्था ही नियम था, कानून था और उसका अनुपालन ही राजा का प्रथम कर्तव्य हुआ करता था। ऐसे माहौल में जनपद अंबेडकर नगर तत्कालीन **फैजाबाद जनपद की टांडा**

तहसील में इल्तिफातगंज से अकबरपुर मार्ग पर केदार नगर बाजार के पास बड़ागांव इब्राहिमपुर में दिनांक 04 फरवरी 1904 को कुर्मी समाज के श्री ननकू चौधरी और श्रीमती नेपाली देवी के घर एक शिशु ने जन्म लिया। माता पिता बहुत ही धार्मिक और श्रद्धालु प्रवृत्ति के थे। ब्राह्मण पुरोहितों के कथन को वह ब्रम्हादेश मानते थे जिसे नकारना वह ब्रह्महत्या। कभी भी उन्होंने ब्राह्णों के आदेश की अवहेलना नहीं की इसी से प्रभावित होकर उन्होंने सुझाव दिया कि बालक का नाम भगवान राम की विजय से जोड़कर रखा जाय, और ''जय राम'' नाम रखा गया बालक का। जैसा कि माता पिता ने सोचा था वैसी ही कीर्ति आगे चलकर बालक जय राम ने प्राप्त की जिन्हे यहां के लोग बहुत ही आदर श्रद्धा और सम्मान से मास्टर साहब, वर्मा जी, नेताजी, बाबू जी और पूर्वांचल के गाँधी के नाम से संबोधित करते हैं।

प्रखर बुद्धि के बालक

बचपन से ही बाबूजी बहुत कुशाग्र बुद्धि के थे। हर काम में सबसे आगे, खेलने और दूसरों की सहायता करने में बाबूजी हमेशा आगे रहते थे। बाबूजी को दया करुणा विरासत में मिली थी। उनसे अन्याय देखा नहीं जाता था। बचपन के लड़ाई झगड़े अक्सर कमजोर साथियों के बीच बचाव को लेकर हो जाया करते थे। बाबूजी को हमेशा कमजोर का ही पक्ष अच्छा लगता था। अर्थात महानता के गुण बाबूजी में बचपन से ही प्रकट हो गए थे।

उस समय देश में बहुत गरीबी थी। गेहूं का उत्पादन बहुत कम होता था। अभी हरित क्रांति नहीं हुई थी। गर्मी का मौसम आम का मौसम हुआ करता था। आम तोड़ना कच्चा आम का गलका, अचार आदि बनाना स्थानीय सभ्यता का एक अंग बना हुआ था और कमोबेश आज भी है। आम के देशी पेड़ काफी बड़े होते थे कलमी पेड़ अभी चलन में नहीं आ पाए थे। बाबूजी आम पर निशाना लगाने में सिद्ध हस्त थे, उनका निशाना

पक्का था।

परम्परा ही नहीं थी पठन पाठन की

चित्र सं. 12

ऐसे सरल और विरल परंतु अत्यंत कुटिल परिवेश में बाबूजी का बचपन बीता। कुटिल इसलिए कि सब कुछ होते हुए भी कुर्मी किसानों, अहिरो, ग्वालों, मछुआरों निषादो के यहां परंपरा ही नहीं थी पठन पाठन की। हम यहां चमार बंधुओं की बात नहीं कर रहे हैं वह तो कमजोर थे आर्थिक रूप से भी परंतु देश का कुर्मी, अहीर और पिछड़ा समाज आर्थिक रूप से कमजोर नहीं मजबूत था लेकिन आर्थिक रूप से वह कितने भी बड़े क्यों न हो जाय ? परंपरा ही नहीं थी पठन पाठन की। सदियों से वर्ण व्यवस्था को संचालित कर रहे पुरोहितों ने दिमाग में इतना अंदर तक ठूंस दिया था कि धन होते हुए भी पिछड़ा समाज पढ़ता लिखता नहीं था इसलिए कि परंपरा ही नहीं थी। बहुत गहरे अर्थ हैं इसके। यही परंपरा थी की पंडित जी पढ़ेंगे और दूसरों को पढ़ाएंगे, क्षत्रिय अर्थात बाबू साहब पढ़ेंगे और शस्त्र धारण करेंगे और गुप्ता जी पढ़ेंगे और व्यापार, खरीद फरोख्त (क्रय विक्रय) करेंगे। शेष लोग पढ़ेंगे नहीं यही परंपरा उस समय थी और देश के बाकी सारे हिस्से में आज भी है। यही हमारे सारे धर्मग्रंथ भी एकसुर से यही कहते हैं। ऐसे परिवेश में बहुत प्रज्ञावान थे बाबूजी के मातापिता श्री ननकू

चौधरी और श्रीमती नेपाली देवी कि उन्होंने सदियों की परंपरा और धर्मग्रंथों के आदेश को तोड़कर बाबूजी को पढ़ाया और आगे बढ़ाया। धन्य हैं ऐसे मातापिता जिन्होंने कभी रोका नहीं परंपरा के बावजूद। बाबूजी पढ़ने में बहुत तेज थे से वह आगे बढ़ते गए और इतने आगे बढ़े कि देश काल की सीमाएं भी नहीं रोक पाई उनके व्यक्तित्व को। आज भी बाबूजी अंबेडकरनगर की खास पहिचान बने हुए हैं।

चित्र सं. 13

शिक्षा दीक्षा

बाबूजी के माता पिता दोनो ही पढ़े लिखे नहीं थे पर उन्हें माता सावित्री फुले और शाहूजी महाराज का संदेश याद था कि जैसे भी हो शिक्षा गृहण करनी चाहिए। अतः सुविधाएं न होते हुए भी उन्होंने बाबूजी के लिए शिक्षा की व्यवस्था की।

पहली पाठशाला

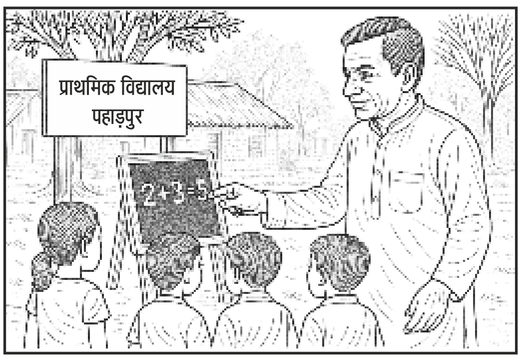

चित्र सं. 14

गांव से सबसे निकट की पाठशाला पहाड़पुर नामक गांव में थी। यह वर्ण व्यवस्था ही थी कि उस समय कोई आवश्यकता ही नहीं महसूस होती थी सभी के लिए शिक्षा की। ऐसा नहीं था कि पैसा नहीं था। पैसा बहुत था और है आज भी मंदिरों में परंतु आवश्यकता ही नहीं थी सभी के लिए शिक्षा की। आवश्यकता ही नहीं थी हमारे पुरोहितो को कि विद्यालय हर एक गांव में हो। गुरुकुल ही पर्याप्त है शिक्षा के लिए, शेष लोग मनुस्मृति में विहित और अपने लिए निर्धारित कार्य करें। बाबूजी की प्रारंभिक शिक्षा यहीं पहाड़पुर प्राथमिक विद्यालय से हुई। बाबूजी प्रारंभ से ही मेधावी थे। वह एक बार जो पढ़ लेते उन्हें याद हो जाता। उनकी स्मरण शक्ति से विद्यालय के सभी शिक्षक उनसे बहुत प्रसन्न रहते थे।

राजकीय जूनियर हाईस्कूल अकबरपुर

पहाड़पुर से प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने राजकीय जूनियर हाईस्कूल अकबरपुर (रेलवे स्टेशन डा यादव की डिस्पेंसरी के पास) में प्रवेश लिया। यहां से कक्षा 8 पास करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए वह फैजाबाद गए और राजकीय इंटर कालेज फैजाबाद से उन्होंने हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षाएं उत्तीर्ण की। बाबूजी प्रारंभ से ही पढ़ने लिखने में तेज थे उन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा में प्रदेश में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए। बाबूजी मेधावी छात्र थे उन्हें सरकार की ओर से पूरे छात्र जीवन में छात्रवृत्ति मिलती रही।

इंटरमीडिएट की परीक्षा उन्होंने प्रथम श्रेणी में पास की और प्रदेश में 4था स्थान प्राप्त किया। इंटरमीडिएट की परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने के बाद उनको शाहूजी महाराज की उक्ति पुनः याद आई और उन्होंने उस समय और आज के शिक्षा केंद्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने के लिए प्रवेश लिया। उसी समय से यह परंपरा बन गई कि मेधावी छात्रों को पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेजा जाय। आज भी यह परंपरा चली आ रही है। यही कारण है कि अंबेडकरनगर आज शिक्षा के क्षेत्र में देश और प्रदेश में अग्रणी है।

इलाहाबाद विश्व विद्यालय से स्नातकोत्तर

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने गणित विषय से स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में केवल उत्तीर्ण ही नहीं की वरन विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान भी प्राप्त किया। इस तरह विद्याध्ययन करते हुए वर्ष 1932 में गणित

चित्र सं. 15

विषय से स्नाकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की। इस समय राजकीय सेवा में मेधावी छात्रों को सीधे, अंकों के आधार पर नौकरी मिल जाती थी। फिर भी बाबूजी को सरकारी नौकरी अच्छी नहीं लगती थी। उनका तेज दिमाग कहीं और काम कर रहा था। सो उन्होंने वर्ष 1936 में हावर्ड टी एन कालेज टांडा में गणित के अध्यापक की नौकरी स्वीकार कर ली। उसके पीछे स्पष्ट आशय था। वह अध्यापन के साथ साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग ले रहे थे। उनकी गतिविधियां देश को आजाद कराने के लिए चल रहीं थी। इसी के चलते वह सरकार की निगाह में भी चढ़े हुए थे।

चित्र सं. 16 जयराम वर्मा बाबू स्मारक इं. का. केदार नगर, टाण्डा में स्थापित मूर्ति एवं उद्यान

तत्कालीन जन जीवन

आज गाँव का बहुत विकास हो चुका है। वैज्ञानिक खेती, सिंचाई के नये-नये साधन, नये-नये बीज, कीटनाशक दवायें, कृषि के आधुनिक संयन्त्र, जुताई के लिए ट्रैक्टर, कल्टीवेटर, रोटावेटर, कटाई के लिये कम्बाइन मशीन, नहर, नलकूप, पम्पिंग सेट, इंजन, बिजली से चलने वाली अनेक मशीनें, सौर ऊर्जा लाइट, रसोई गैस, सी०सी० रोड, इण्टरलॉकिंग एवं खड़न्जा, गाँवों को मुख्यमार्ग से जोड़ने वाली प्रधानमंत्री योजना की सड़कें, स्कूल, अस्पताल, बैंक, पोस्ट आफिस आदि सभी संसाधन आज गाँवों में उपलब्ध हैं। आने-जाने के लिये परिवहन निगम की बसें, प्राइवेट बसें, जीप, विक्रम-टैम्पो, आटो एवं अन्य परिवहन के साधन हो चुके हैं। आधुनिक भारत में विकास की गति एवं समृद्धि गाँवों तक दिखायी देने लगी है।

आज के गाँव में तथा उस समय के गाँव में धरती और आकाश का अन्तर था। उस समय खेती पूरी वर्षा पर आधारित थी। सिचाई के लिये नहर, नलकूल, पम्पिंग सेट, इंजन एवं बिजली से चलने वाले संयन्त्र नहीं थे। जुताई के लिये ट्रैक्टर, कटाई के लिये कम्बाइन मशीन, मड़ाई के लिये थ्रेसर, आने-जाने के लिये परिवहन निगम की बसें, टैक्सी, जीप और प्राइवेट बसें भी नहीं थीं। गाँवों स्कूल, अस्पताल, बैंक और पोस्ट ऑफिस आदि का अभाव था या इनकी संख्या बहुत कम थी। कृषि का कार्य मानवश्रम के द्वारा होता था, जुताई का कार्य बैलों द्वारा देशी हल से किया जाता था, ढुलाई का कार्य बैलगाड़ी एवं इक्का-तांगा द्वारा होता था। गाँव के लोग ब्रह्ममुहूर्त में ही जाग जाते थे। पुरुष लोग गाय-बैल, भैंस तथा अन्य जानवरों को चारा खिलाते थे, महिलायें जाँता-चकिया द्वारा आँटा पीसने का कार्य, मूसल द्वारा ओखली एवं पत्थर की बनी कांड़ी से धान,

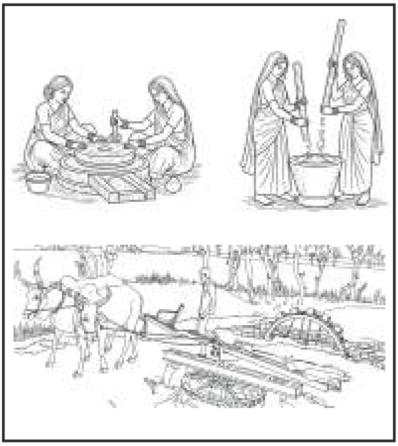

चित्र सं. 17 जांत, पहरूआ और रहट

सांवाँ, कोदो, काकुन, जड़हन-धान, बगरी धान आदि से चावल निकालने का कार्य करती थीं। प्रात:काल तीन बजे से ही किसान हल-बैल लेकर खेतों में जाते थे। गाँव के लोग बहुत परिश्रमी होते थे, आपस में मिल-जुलकर एक दूसरे का सहयोग कर कृषि कार्य करते थे। उस समय खरीफ की फसलों में देशी धान में बगरी का धान, जड़हन धान, सांवाँ, कोदो, काकुन, उरद, अरहर, ज्वार-बाजरा, मक्का, मूंगफली, तिल, शकरकन्द, सनई, आदि फसलें पैदा की जाती थीं। रबी की फसलों में गेहूं, जौ, चना, मटर, आलू, सरसों, अलसी, तिउरा, टमाटर, बैंगन, गोभी, शलजम, गाजर, धनिया, मिर्चा, लहसुन, प्याज, चुकरकन्द, पालक, मेंथी, गन्ना आदि फसलें पैदा की जाती थीं। सिंचाई के साधन के रूप में चरखी, डोगला, रहट, ढेंकुर, कुआँ, पोखरा एवं तालाब आदि ही प्रचलित थे। आने-जाने के लिये बैलगाड़ी, इक्का-तांगा, पीनस आदि के ही साधन उपलब्ध थे। सरसों, अलसी, तिउरा, महुवा की कोइनी, महुआ की बीज आदि से तेल निकालने के लिये बैल द्वारा चालित देशी कोल्हू से तेल निकाला जाता था। गन्ना की पेराई का कार्य बैलों से चलने वाले देशी कोल्हू से किया जाता था। देशी कोल्हू से निकलने वाले गन्ने के रस से गुड़, राब, भेली आदि तैयार किया जाता था।

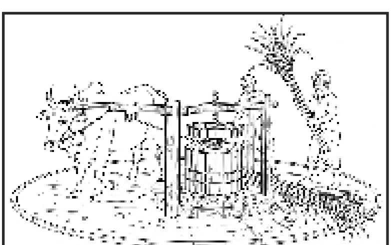

चित्र सं. 18 गन्ना पेराई

जहाँ गन्ने की पेराई होती थी उसे कोल्हार कहा जाता था। उस समय गन्ना की पेराई बहुत होती थी, गाँव में जगह-जगह कोल्हार चलते थे, रातभर गुड़, राब, भेली बनाने का कार्य होता था। कोल्हार में लोगों को बुला - बुलाकर गुड़-भेली खिलाया

जाता था, गुड़ पकाने वाले कड़ाहे में आलू को छीलकर लोहे के तार या रस्सी में छेदकर कड़ाहे में डाल देते थे, आलू रस में पककर बहुत मीठी हो जाती थी, उसको लोग बड़े चाव से खाते थे। कोल्हार में आलू को आग में भूनकर भी खाते थे। मटर की घुघरी बनाकर खाते उसके बाद गन्ने के रस को पीकर लोग मस्त हो जाते थे। गन्ने के खेत में लोग सुबह से ही गन्ने को चूसते थे और पेट भर लेते थे, यह एक टॉनिक का कार्य करता था।

उस समय गाँवों में डायबिटीज एवं ब्लडप्रेशर के मरीज नहीं थे, लोगों में आपसी प्रेम एवं भाई-चारा था, उस समय संयुक्त परिवार होता था। परिवार के लोग बड़े-बुजुर्गों की आज्ञा का पालन एवं उनका सम्मान करते थे। गाँव के नौजवान हृष्ट-पुष्ट एवं निरोगी होते थे। गाँवों में दूध प्रचुर मात्रा में पाया जाता था इस कारण दूध-दही, घी एवं छाछ की बहुलता थी। गाँवों में चाय का प्रचलन नहीं था, देशी चीजों एवं घर की बनी हुयी चीजों से ही मेहमानों का स्वागत किया जाता था । उस समय मोटे अनाज जैसे चना, मटर, ज्वार, बाजरा, सावाँ, काकुन, कोदो, पेटुआ (पटसन) तिल आदि की बहुत पैदावार होती थी। गाँवों में उस समय देशी आम की बहुत बड़ी-बड़ी बागें होती थीं, जिसमें प्रतिवर्ष अधिक मात्रा में फल लगते थे और लोगों का 2 महीना बागों में बीतता था। लोग आम का फल एवं उससे बनी हुयी अमावट खाते थे, जिससे वे काफी स्वस्थ बने रहते थे। बागों में इतना ज्यादा फल होता था कि खट्टे आम जानवर भी नहीं खाते थे। सावन के महीने में पेड़ की डालों पर झूले पड़ जाते थे, नवयुवतियाँ और महिलायें झूला झूलती, कजरी एवं सावन गीत गातीं थीं, नवयुवक लोग झूले पर पेंगें मारते थे, बहुत मनोहर एवं मनोरंजक वातावरण रहता था। झूला झूलती महिलायें एवं नवयुवतियाँ तथा नवयुवक आनन्दित एवं प्रसन्नचित होते थे। त्योहारों में देशी घी की पूड़ी, गुलगुला, गुझियां से गाँव महक उठता था। लोग आपस में मिल-जुलकर त्योहार मनाते थे, किसी में कोई बैर भाव नहीं था। गाँव के नवयुवक बड़े बुजुर्गों के सामने कोई उद्दण्डता नहीं करते थे। उस समय बिरहा, आल्हा, फगुआ गीत द्वारा लोग मनोरंजन प्राप्त करते थे। इसमें बरवा बीठलपुर के श्री सहदेव वर्मा जी के गीत विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। गाँवों में घरों पर गाय-बैल, भैंस द्वार की शोभा बढ़ाते थे। उस

समय कोई दूध नहीं बेचता था। गाँव का वातावरण एवं हवा–पानी बहुत शुद्ध था। घर के आंगन में तुलसी के पौधे से घर की शोभा बढ़ती थी। अतिथि लोग कई दिनों तक रुकते थे, गाँव के लोग उनका आदर एवं सत्कार भली–भाँति करते थे। उस समय जहरीले फास्ट फूड का प्रचलन नहीं था, दलहन का उत्पादन अधिक मात्रा में होता था।

उस समय के खेल कबड्डी, गुल्ली–डण्डा, सुर्र, शेरपैंतिया, कुश्ती आदि थे। कुश्ती के लिये जगह–जगह दंगल का आयोजन होता था। दंगल में जिले के प्रसिद्ध पहलवान आते थे, गाँव के लोग इकट्ठा होकर के बड़े उत्साह के साथ दंगल को देखते थे। गाँव में ही कबड्डी का आयोजन होता था, नवयुवक कवड्डी खेलते थे और पूरे गाँव के लोग इकट्ठा हो करके कबड्डी का आनन्द लेते थे। अच्छे आल्हा गायक को बुलाकर आल्हा गायन के माध्यम से वीर रस प्राप्त कर मनोरंजन एवं ऊर्जा प्राप्त करते थे। विरहा के माध्यम से भक्तिरस प्राप्त कर लोग आध्यात्मिकता का आनन्द लेते थे।

बाबू जी की बाल्यावस्था पैतृक गाँव, बड़ागाँव इब्राहिमपुर एवं ननिहाल दोहरीपुर में बीता था। बाल्यावस्था में वह कबड्डी, गुल्ली–डण्डा, सुर्र एवं अन्य खेल–कूद के शौकीन थे। अपनी उम्र के बालकों के साथ कबड्डी, छलांग लगाना एवं दौड़ना उनको अच्छा लगता था। इस खेल के लिये बालकों में प्रतिस्पर्धा होती थी। कबड्डी उस जमाने का प्रसिद्ध खेल था, उस समय अपने देश में क्रिकेट के खेल का प्रचलन नहीं था, बच्चों में ढेले द्वारा निशाना साधनें की प्रतिस्पर्धा होती थी। उनको निशाना साधने में बहुत आनन्द आता था। बार–बार ढेले द्वारा निशाना साधने के कारण वे अच्छे निशानेबाज बन गये थे। आम के पेड़ पर पका आम देख करके उस पर ढेले द्वारा निशाना साधकर पका आम तोड़ देते थे। गाँव के किसानों का अभावग्रस्त जीवन देखकर उन्हें बहुत दुःख होता था। गाँव के लोग अधिकतर निरक्षर थे। उस समय गाँव में बहुत गरीबी थी किन्तु बाबू जी के परिवार की आर्थिक स्थिति तुलनात्मक रूप से अच्छी थी।

– राम केवल वर्मा

स्वाधीनता की लड़ाई

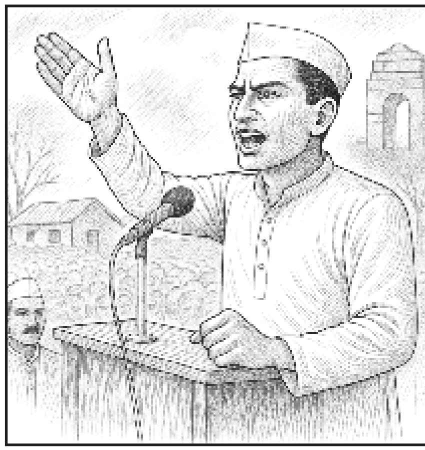

चित्र सं. 19

भारतीय जनमानस के दिलो दिमाग पर अनियंत्रित रूप से हावी वर्ण व्यवस्था के सिद्धांत से बाबूजी बहुत दुखी रहते थे। परंतु करते भी क्या जनमानस का अकेले सामना करना आत्महत्या के बराबर होता। अत: वह सब समझते और जानते हुए भी अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में उतरे हुए थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से वर्ष 1932 में स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह हावर्ड टी एन कालेज टांडा में अध्यापन का कार्य करने लगे।

टी.एन. हावर्ड कालेज में अध्यापक

अध्यापन का कार्य प्रारंभ से ही समाज सेवा से जुड़ा रहा है, इसीलिए शिक्षक को समाज में विशेष सम्मान की निगाह से देखा जाता है। शिक्षक बच्चों के माध्यम से समाज को दिशा देने का बहुत बड़ा कार्य करता है। इसी कारण आज भी शिक्षक को राजकीय सेवा में रहते हुए भी लोकतंत्र में चुनाव लड़ने का अधिकार प्राप्त है। यह अधिकार किसी भी लोक सेवक को प्राप्त नहीं है। स्पष्ट रूप से बाबूजी इससे दूर कैसे रह सकते थे। वह उतर पड़े पूरी तरह देश की सेवा में, उसे आजाद कराने की मुख्य धारा में।

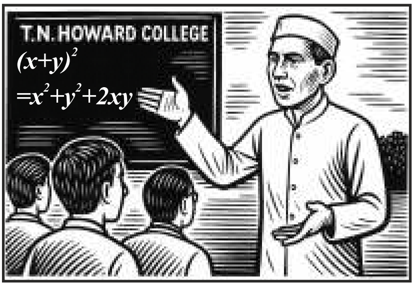

चित्र सं. 20

अपने विद्यालय से शिक्षण कार्य के उपरांत वह स्वतंत्रता आंदोलन भी चलाते थे। वह यहीं से महात्मा गांधी से प्राप्त निर्देशों का पालन करते हुए अध्यापन कार्य करते हुए स्वतंत्रता आंदोलन का भी संचालन करते थे। अपने अध्ययन और अध्यापन का कार्य संपादित करने के पश्चात सायं 4 बजे के बाद वह स्वतंत्रता के आंदोलन की आगामी योजना बनाते और तदानुसार कार्यवाही की जाती। बाबूजी स्वतंत्रता संघर्ष में इतने प्रचारित हो गए थे कि कोई भी धरना प्रदर्शन होता तो उसमे बिना किसी जांच पड़ताल के बाबू जय राम वर्मा साहब का नाम लिखा रहता। 1939 में पहली बार बाबूजी को राष्ट्रद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया और उन्हें जेल में बंद किया गया। गिरफ्तारी सीधे टांडा कॉलेज के निवास से की गई।

रामबली नेशनल इण्टर कालेज की स्थापना

वर्ष 1940 में जेल से छूटने के बाद उन्होंने उन्होंने श्री महादेव वर्माजी की सहायता से रामबली नेशनल इंटर कालेज गोशाईगंज की स्थापना की थी। इस विद्यालय पर ब्रिटिश काल में भी भारतीय तिरंगा झंडा फहराता रहता था। इसे उतरवाने का का बहुत प्रयास ब्रिटिश अधिकारियों ने किया परंतु बाबूजी के तेवर और हर बार एकत्र जन सैलाब से वह पीछे हट जाते। अंतत: उन्होंने इस विद्यालय को अपवाद मान कर छोड़ दिया। यह थी बाबूजी के जुझारू क्षमता और अपनी बात पर अडिग रह कर मनवाने की तरकीब। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में गिरफ्तार

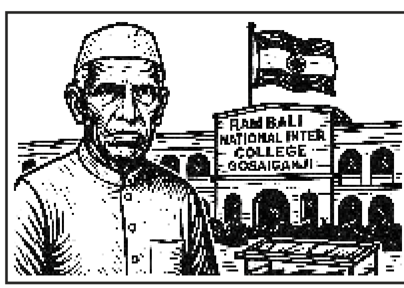

चित्र सं. 21

किए गए तो 111 दिन जेल में रहने के बाद ही छूट सके। साथ ही 100.00रुपया जुर्माना भी देना पड़ा। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में तीन माह तक फैजाबाद जेल में और 1945 में 15 दिन सेंट्रल जेल वाराणसी में निरुद्ध रहे।

स्वाधीनता आन्दोलन

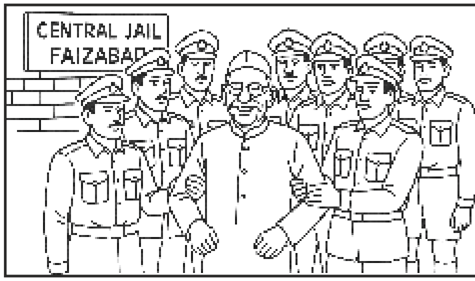

चित्र सं. 22

असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के समय बाबूजी ने फैजाबाद टांडा क्षेत्र से महात्मा गांधी का प्रतिनिधित्व किया। महात्मा गांधी से बाबूजी इतने प्रभावित थे कि चरखा कातना उन्होंने नित्यप्रति का नियम बना लिया था। जब भी महात्मा गांधी उत्तर प्रदेश में होते थे बाबूजी छाया की भांति उनके साथ रहते थे और उनके सारे आदेशों पर अक्षरशः अमल कराते थे। इसीलिए बाबूजी पूर्वांचल के गांधी के नाम से विख्यात थे। बाबूजी ने वर्ष 1946 के पहिले आम चुनाव में बाराबंकी से कांग्रेस के टिकट पर निर्विरोध चुनाव जीतकर राज्य की विधान सभा में प्रवेश किया।

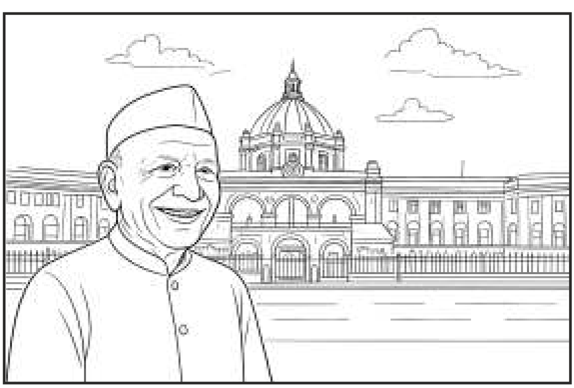
चित्र सं. 23

गांधी आश्रम अकबरपुर : कैंप कार्यालय

बाबूजी को अकबरपुर (संप्रति जनपद अंबेडकरनगर का मुख्यालय) का गांधी आश्रम अपने घर जैस लगता था। लगे भी क्यों नहीं ! अपनी पूरी ताकत लगाकर उन्होंने इसे एक सर्वश्रेष्ठ केंद्र के रूप में स्थापित किया था। मैं बचपन में अपने मित्रों और वरिष्ठों से पूछा करता था कि अकबरपुर तहसील है। सब लोग कहते हैं कि यहां का गांधी आश्रम प्रदेश के सबसे बड़े आश्रमों में से एक है। तो इसे तो लखनऊ या कम से कम फैजाबाद में तो होना ही चाहिए था। मुझे सही उत्तर नहीं मिल पाता था। आज यह जानकारी स्पष्ट रूप से समझ आ रही है कि ऐसा क्यों था। बाबू जय राम वर्मा साहब की ईमानदारी और कड़ी मेहनत की ही देन थी। वह महात्मा गांधी के प्रति इतना समर्पित थे की नियम से प्रतिदिन चरखा चलाकर सूत कातते थे। खादी वस्त्रों के प्रति इतनी श्रद्धा से ही खादी ग्रामोद्योग की इतनी बड़ी फैक्ट्री खड़ी हो सकी थी अकबरपुर में। बहुत से लोगों को रोजगार मिला हुआ था इसमें परंतु किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि एक पैसे की भी चोरी कर ले।

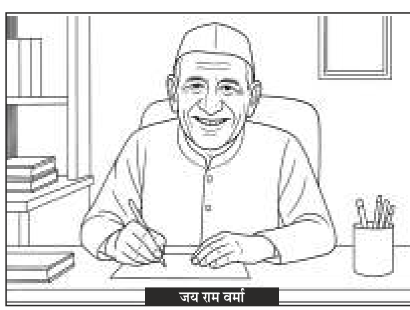

चित्र सं. 24

बाबूजी जब भी अकबरपुर में होते थे गांधी आश्रम उनका अस्थाई कार्यालय हुआ करता था। वह अपना अधिकांश समय वहीं दिया करते थे। यही कारण था कि वहां का कोई अधिकारी कर्मचारी एक भी पैसे की चोरी करने की

सोच भी नहीं पाता था। बाबूजी मातहतों से साफ साफ कहते थे कि जरूरत है तो बता दो उधार दिला दूंगा। लेकिन चोरी पकड़ी गई तो मैं खुद जेल भिजवाऊंगा। वह प्रतिदिन बहुत ही सूक्ष्मता से एक एक बिंदु का निरीक्षण करते और बड़ी ही सख्ती से कार्यवाही कराते। उनकी सख्ती और ईमानदारी के बारे में सभी अवगत ही हैं। उनकी इसी ईमानदारी के चलते सभी अधिकारी कर्मचारी पूरी निष्ठा और लगन से काम करते थे। अपने ईमानदार कर्मचारियों का खुला समर्थन बाबूजी की प्रकृति थी।अन्याय वह बर्दाश्त नहीं करते थे।इसमें कोई शंका नहीं कि बाबूजी पूर्वांचल के सर्वमान्य नेता थे। उन्हें सरकार से पैसा लाने में समस्या नहीं होती थी। सरकार को मालूम था कि जहां पर बाबूजी हैं वहां पैसे की चोरी नहीं हो सकती। बाबूजी प्रयास कर सरकार से पैसा लाते थे और गांधी आश्रम का विकास होता था। यही कारण है कि अकबरपुर का गांधी आश्रम प्रदेश ही नहीं वरन देश का सबसे बड़ा और विकसित आश्रम के रूप में आज भी स्थापित है।

विरोधी तो सबके होते हैं कोई कितना भी बड़ा धर्मात्मा हो विरोधी तो होंगे ही। बाबूजी के भी विरोधी थे। उन्हें चिढ़ाने के लिए वह पीछे पड़ गए उनकी सबसे प्रिय वस्तु के। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के उन सबने एकबार इतने कान भरे कि उन्होंने अकबरपुर के गांधी आश्रम का लाइसेंस ही निरस्त कर दिया। बाबूजी को खबर लगी तो उन्हें माजरा समझते देर नहीं लगी। उन्होंने किसी से कुछ कहा नहीं। चुपचाप वह दिल्ली गए और लाइसेंस बनवा लाए।

राजनीति और समाज सेवा

बाबूजी से अन्याय बर्दाश्त नहीं होता था। लोगों के कष्ट उन्हें चुप नहीं रहने देते थे। लिहाजा हावर्ड कालेज में अध्यापन काल से ही वह स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेने लगे थे। यहां तक कि स्थानीय स्तर पर आंदोलन का नियमन और संचालन यहीं से होता था। वर्ष 1936 तक वह पूरी तरह राजनीति में सक्रिय हो गए थे। 1938 में बाबूजी प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बने और 1950 से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बन गए। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में बहुत सक्रियता से भाग लिया। इसी आंदोलन में इनकी गिरफ्तारी हुई और एक वर्ष से अधिक काल तक वह फैजाबाद और सेंट्रल जेल वाराणसी में निरुद्ध रहे।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में बाबूजी ने फैजाबाद का नेतृत्व किया और वर्ष 1946 में चुनाव क्षेत्र बाराबंकी से कांग्रेस के टिकट पर निर्विरोध विजयी होकर प्रदेश की पहली विधान सभा में प्रवेश किया। उसके बाद से 39 वर्षों तक बाबूजी ने लोक सभा या विधान सभा से अकबरपुर /अंबेडकरनगर/बाराबंकी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। अपने संपूर्ण काल क्षेत्र में उनकी उपस्थिति साफ नजर आती है। उन्होंने हर स्तर पर संघर्ष कर, जूझ कर क्षेत्र के विकास के लिए कार्य किया। बाबूजी के राजनैतिक कार्यकाल का विवरण निम्नवत है।

चित्र सं. 25 वर्ष 1946 में विधान सभा में प्रवेश करते हुए

राजनैतिक सफर

चित्र सं. 26

1. बाराबंकी विधानसभा क्षेत्र से निर्विरोध विधान सभा सदस्य रहे (वर्ष 1946 से 1952 तक)।
2. वर्ष 1952 में अकबरपुर से कांग्रेस की ओर से विधायक बने।
3. वर्ष 1957 और 1962 में टांडा से कांग्रेस के टिकट पर विधायक बने।
4. दिनांक 01अप्रैल 1967 को पिछड़ों के अधिकारों को लेकर कांग्रेस से मोहभंग और त्यागपत्र दिया। चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में जनकांग्रेस का गठन किया गया। इस जनकांग्रेस में 17 संस्थापक सदस्य थे जिसमें 14 बाबूजी के साथ थे मात्र 3 चौधरी चरण सिंह के साथ थे।
5. 1970 में भारतीय क्रांति दल के टिकट से उपनिर्वाचन में विधान सभा टांडा से सदस्य निर्वाचित।
6. 1980में पुनः कांग्रेस में वापसी और फैजाबाद लोक सभा क्षेत्र से संसद के लिए निर्वाचित।
7. मार्च 1985 में प्रदेश की विधान सभा के लिए कांग्रेस से टांडा क्षेत्र से निर्वाचित।
8. वर्ष 1959 से 1961 तक उपमंत्री स्थानीय निकाय रहे।
9. 1962 से 67 तक ,उत्तर प्रदेश सरकार में वह उपमंत्री वित्त और न्याय रहे।
10. 1967–68 में चौधरी चरण सिंह सरकार में कृषि ,पंचायती राज , सामुदायिक विकास, गन्ना और चीनी मिल विभागों के कैबिनेट मंत्री बने।

11. 1985 से जीवन के अंतिम समय तक उत्तर प्रदेश सरकार में नियोजन मंत्री रहे।

चित्र सं. 27

इन पदों पर कार्य करने के अतिरिक्त जिन संस्थाओं के मुखिया रहे या सदस्य रहते हुए कार्य किया उसका विवरण निम्नवत है।

विधान सभा में लोक लेखा समिति, सार्वजनिक उपक्रम एवं निगम समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। बापू स्मारक इंटर कालेज नाउसांडा की प्रबंध समिति के 30 वर्षों, सर्वोदय इंटर कालेज कोटवा मुहम्मदपुर के 24 वर्षों, बालिका इंटर कालेज नाऊसांडा के तीस वर्षों, तक प्रबंध समिति के अध्यक्ष रहे। कामता प्रसाद सुंदर लाल स्नातकोत्तर साकेत महाविद्यालय फैजाबाद के 15 वर्षों तक अध्यक्ष रहे। जिला सहकारी संघ फैजाबाद, उत्तर प्रदेश पिछड़ा वर्ग संघ उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष 5 वर्षों तक रहे। संसदीय पिछड़ा वर्ग फोरम के पांच वर्षों तक संयोजक रहे। यह तो वह कार्य या पद हैं जो ज्ञात हैं। उनके बहुत सारे कार्य या पद ऐसे हैं जिनके बारे में जानकारी ही नहीं है। जैसे विधायक या सांसद रहते हुए उन्होंने कितने विद्यालयों को अपनी निधियों से उपकृत किया था इसकी जानकारी नहीं है। कारण कि उस समय पत्थर लगवाने की परंपरा नहीं थी। यह तो स्पष्ट है कि उनकी निधियाँ सारी की सारी विद्यालयों पर व्यय होती थीं। इस तरह पचासों विद्यालय इस तरह के हैं जिनको उन्होंने आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई थी।

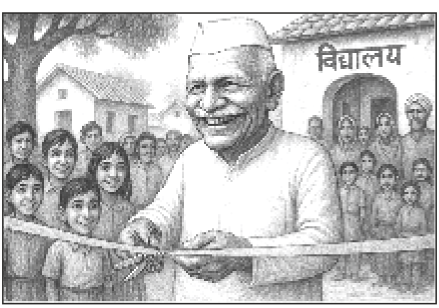

चित्र सं. 28

गरीबों मजबूरों के मसीहा

गरीबों और कमजोरों पर अन्याय बाबू जय राम वर्मा साहब से बर्दाश्त नहीं होता अस्पृश्यता बर्दाश्त नहीं होती थी। उनके समझ में यह नहीं आता था कि अनुसूचित जातियों से इतना भेदभाव क्यों ? बचपन में तो जो परंपरा है जो चला आ रहा है वही सही। परंतु जब वह कुछ सोचने समझने के लायक हुए तो पूछते थे। परंतु यही जवाब मिलता था कि यह लोग नीच हैं, मजदूर हैं। यह बिना मार के काम नहीं करते। बांस बतियाए सूद्द लतियाए। वह मन मसोस कर रह जाते कि कारण क्या है इतनी घृणा का? और फिर इतनी घृणा हमारी परंपरा है? जब वह पढ़ने बाहर निकले तब सारी बातें स्पष्ट हुई। तथ्यों के स्पष्ट होते ही उनका नजरिया साफ हो गया। वहीं से उनके मन में गरीबों, दलितों कमजोरों के प्रति अतिशय संवेदना उत्पन्न हुई। कमजोरों पर अत्याचार तो बचपन से ही बर्दाश्त नहीं होता था परंतु अस्पृश्यता समझ नहीं आती थी। नैतिक और सामाजिक रूप से कोई सभ्य समाज इतना भी पतित हो सकता

चित्र सं. 29

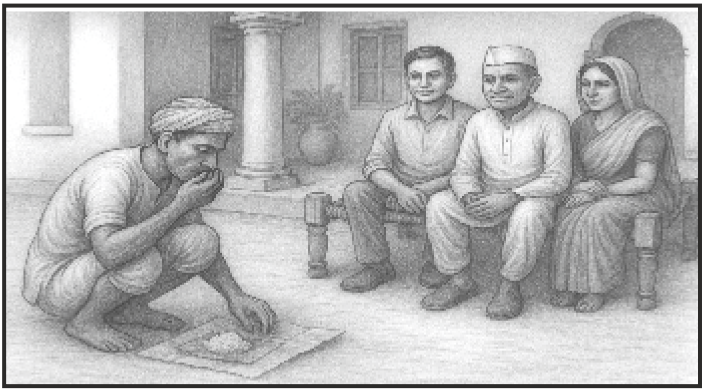

चित्र सं. 30 सामाजिक भेदभाव

है कि उसने मानवता की हत्या ही कर डाली हो वह भी कानून बनाकर ? अस्पृश्यता और घृणा हमारे धार्मिक कानून की धुरी है,यह जानने पर उनका मन विचलित हो उठा। परंतु समस्या यह थी कि सभी कुओं में इस कदर भांग घोली हुई थी कि कोई सुनने को तैयार ही नहीं था। जो सुन और समझ सकता था वह पुरोहित समाज था जो सोद्देश्य यह सब कर रहा था। फलतः वह और उल्टी पट्टी पढ़ा दिया करता था। बहुत चिंतन मनन करने पर यही निष्कर्ष निकला कि सभी को शिक्षा केवल यह कहने से काम नहीं चलेगा वरन ठोस कार्य करते हुए जो भी क्षमतावान लोग हैं पिछड़े और दलित समाजों में उन्हें जैसे भी हो प्रोत्साहित करना होगा विद्यालय की स्थापना करने में। पिछड़े समाजों को शिक्षा के काम में आगे बढ़ाना ही गरीबों मजदूरों की सच्ची सेवा है। अध्ययन काल में उन्होंने देखा कि फ्रांस और रूस में तो मजदूर भी पढ़े लिखे होते हैं फिर ऐसा क्या है कि हमारे देश के मजदूर पढ़े लिखे नहीं हैं? **सब प्रश्नों का जवाब वर्ण व्यवस्था में ही निकल कर आया जो कानून बनाती है कि शिक्षा सबके लिए नहीं है। सबके लिए शिक्षा की व्यवस्था कर उन्होंने बहुत बड़ा कल्याण कर दिया गरीबों और मजदूरों का। पेट तो भर ही लेते हैं जैसे तैसे आम की गुठली को पीस कर उसका आटा बना कर परंतु मानवता को जीने का अधिकार ही मिलता है शिक्षा से।**

भूदान आन्दोलन का नेतृत्व

इस समय देश के बड़े मनीषि विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन चला रखा था। भूदान आंदोलन के द्वारा वह बड़े भूमिधरों से भूमि मांगते थे और उसे भूमिहीनों को दान कर दिया जाता था। इसमें राजस्व विभाग बिना कोई शुल्क लिए भूमिहीनों को पट्टा किया करता था। बाबूजी इस आंदोलन में बहुत पहिले से जुड़े थे और अपने हर उद्‌बोधन में भूस्वामियों से थोड़ी सी भूमि दान करने का आग्रह किया करते थे। अपने आंदोलन के दौरान बिनोवा भावे फैजाबाद आए। बाबूजी ने उनका स्वागत गोसाईगंज स्थित अपने रामबली नेशनल कालेज में किया और पदयात्रा के साथ सोहावल तक आए।

बाबूजी ने एक बार नहीं कई बार अपने बक्तब्यों / ज्ञापनों के माध्यम से न्यूनतम दैनिक मजदूरी तय करवाई। यद्यपि भूमिधर समाज हमेशा न्यूनतम मजदूरी का विरोध ही करता था फिर भी वह न्यूनतम मजदूरी निर्धारित किए जाने के पक्ष में थे। सरकार में रहते हुए उन्होंने न्यूनतम मजदूरी का बिल पास कराया था।

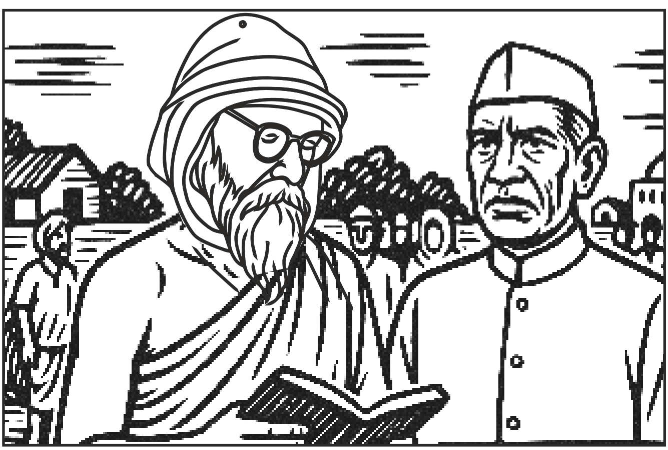

चित्र सं. 31 बिनोबा भावे के साथ सोहावल में भूदान आन्दोलन में

कुरीतियों का खात्मा : प्रधान उद्देश्य

बाबूजी जीवन पर्यंत शिक्षा के विकास के लिए संघर्षरत रहे। उनकी पूरी विकास निधियां विद्यालयों की स्थापना में ही उपयोग की जाती रहीं। बाबूजी केवल यहीं तक सीमित नहीं थे। उनके कार्य का दायरा बहुत बड़ा था। सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन की शुरुआत ही उनके हाथों से हुई थी पूर्वांचल में। अस्पृश्यता, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या जैसी बुराइयों पर उन्होंने कड़े कदम उठाए थे। इसी लिए उन्हें पूर्वांचल का गांधी कहा जाता था। वह अपने भाषणों में बहुत ही स्पष्टता से इंदिरा गांधी का उदाहरण देते हुए बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान केंद्रित करते थे।

बाल विवाह सबसे बड़ी समस्या

बाल विवाह उस समय पूर्वांचल में बहुत ही प्रचलित कुप्रथा थी। इसमें पिछड़ा और दलित समाज सबसे अधिक प्रभावित था। कम उम्र में यहां तक कि 6 वर्ष में बच्चों का विवाह हो जाया करता था पढ़ने लिखने की उम्र में ही उनका भविष्य तय हो जाता था। ऐसे में लड़कों को तो कोई समस्या नहीं होती थी परंतु बाल विधवाओं की समस्या अपने आप उत्पन्न हो जाती थी। इसी समस्या की तह में जाते हुए उन्होंने बालिका शिक्षा के लिए प्रयास किए और बालिका विद्यालय को प्रोत्साहित किया। बाल विवाह पर लोगों ने उनसे कहा कि पहिले वह अपनी

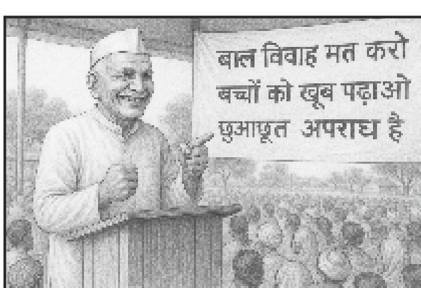

चित्र सं. 32

बिरादरी में तो बाल विवाह बंद करके दिखाएं। इसपर उन्होंने अपने रिश्तेदारों से लड़ाई मोल लेते हुए अपने एक रिश्तेदार पर एफआईआर भी करवाई। बाबूजी बालिका शिक्षा हेतु इसीलिए विद्यालय की स्थापना पर जोर देते थे ताकि बालिकाओं के शिक्षा लेने में लगाया जा सके।

पृथक बालिका विद्यालय

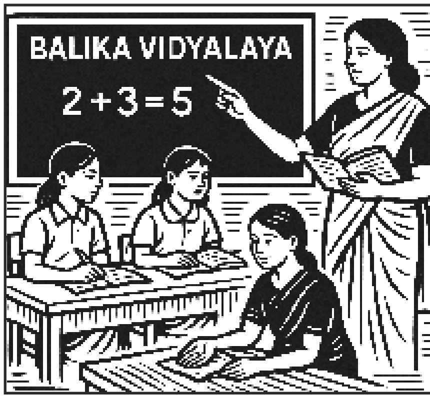

चित्र सं. 33

लोग उनसे सवाल करते थे। बाबूजी स्कूल तो हैं नहीं। हम लड़कों के साथ बेटियों को स्कूल नहीं भेजेंगे। हम बच्चियों का ब्याह कर उनका जीवन सुरक्षित करते हैं आप इसका विरोध करते हो। वह उत्तर देते कि 5/ 6 साल की उम्र में विवाह से बच्चियों का भविष्य सुरक्षित नहीं होता वरन बर्बाद होता है। **मान लो कि किसी बीमारी या दुर्घटना से मृत्यु हो गई तो लड़कों पर तो फर्क नहीं पड़ेगा परंतु बिटिया तो विधवा हो जायेगी।** बच्चों का अशिक्षित रह जाना देश ही नहीं वरन मानवता के लिए अभिशाप है। **अशिक्षित बच्चों की स्थिति बोलने वाले जानवरों की सी होती है। उसे अपने मित्र और शत्रु का भी ज्ञान नहीं होता। जब उसे मित्र**

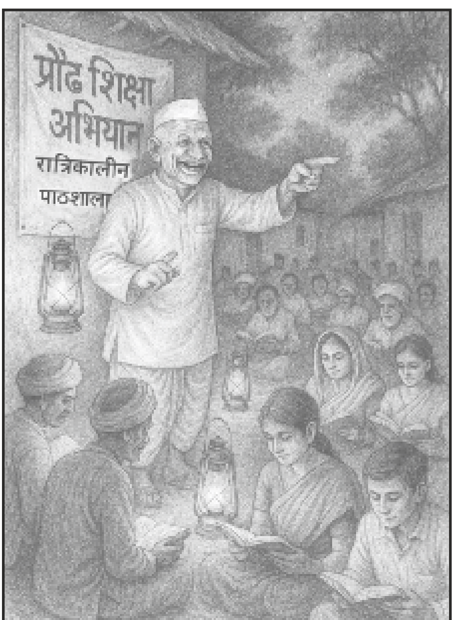

चित्र सं. 34 प्रौढ़ शिक्षा अभियान

और शत्रु का ज्ञान नहीं होगा तो उसकी स्थिति एक बोलने वाले जानवर से अधिक की नहीं होती। सहशिक्षा के लिए उस समय कोई तैयार नहीं होता था अत: बाबूजी ने कन्या विद्यालय पर अपना ध्यान केंद्रित किया।

उस समय साक्षरता की दर मात्र 20 प्रतिशत थी। कानूनन धार्मिक रोक होने के कारण पिछड़ा और दलित समाज बिलकुल ही पढ़ा लिखा नहीं था। बाबूजी ने सरकार से विशेष आग्रह कर प्रौढ़ शिक्षा का विशेष अभियान अपने क्षेत्र में चलवाया। क्या समय था वह ! कानूनन शिक्षा का अधिकार न होने से 80 प्रतिशत समाज पढ़ा लिखा नहीं था। ऐसे में सरकार की ओर से रात्रि कालीन अस्थाई विद्यालय चलवाए गए थे।

अस्पृश्यता अभिशाप

बाबूजी अस्पृश्यता को समाज के लिए अभिशाप मानते थे। अस्पृश्यता उस समय और आज भी समाज में इतनी रची बसी थी कि कोई सुनने को तैयार ही नहीं होता था। बाबा साहब भले ही संविधान के रचयिता रहे हों लेकिन धर्म की कट्टरता इस कदर प्रबल थी कि अनुसूचित जातियों के लोगों को छूना भी निषिद्ध था। अपने भाषणों और वक्तव्यों में वह इस प्रथा की निंदा करते थे। इस बिंदु पर वह मान्यवर कांशीराम से बहुत प्रभावित रहते थे।

चित्र सं. 35 ऊपर से पानी पिलाने का दृश्य

ईमानदारी की प्रतिमूर्ति

बाबू जय राम वर्मा साहब पूर्वांचल के गांधी के नाम से जाने जाते हैं। बाबूजी ईमानदारी की प्रतिमूर्ति थे। एक बार जब वह कृषि सहकारिता गन्ना और चीनी मिलों के कैबिनेट मंत्री थे उस समय अपना कार्य करवाने के लिए एक मिल मैनेजर और मालिक उनके लखनऊ आवास पर आए। इत्तेफाक से वह उस समय बंगले पर नहीं थे। वह मिल मालिक उनके आवास पर एक अटैची उनके निजी सहायक को देकर चले आए और बता दिया कि उनकी बात माननीय मंत्री जी से हो गई है इस अटैची में उनके आवश्यक गोपनीय कागजात हैं। यह माननीय मंत्रीजी के आने पर उन्हें दे दें। यह कहकर वह वापस चले आए। **जब बाबूजी आवास पर आए तो उन्होंने देखा कि अटैची रुपयों से भरी हुई है। उन्होंने तत्काल टेलीफोन कर उस मैनेजर को बुलवाया और अटैची वापस करते हुए कहा कि तुम्हें देश की जनता की सेवा के लिए लगाया गया है न कि उसे लूटने के लिए।** यह तुम्हारी पहली गलती है इसलिए माफ कर रहा हूं आगे से ऐसा कुछ सुनाई पड़ा तो सीधा जेल ही भेजूंगा। इसे ले जाओ जहां से लाए हो उसे वापस कर दो और ईमानदारी से काम करो।

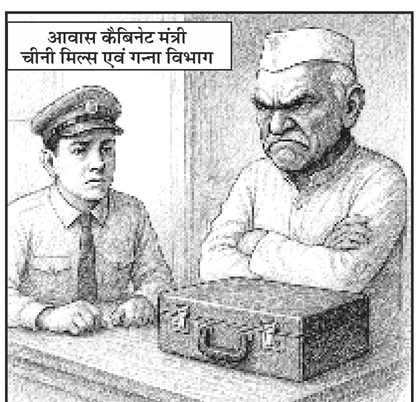

चित्र सं. 36

यह कहा जाता है कि राजनीति में ईमानदारी से काम

करना संभव नहीं है। बिना चंदा लिए राजनीति नहीं हो सकती और जब चंदा लिया जाएगा तो उस आदमी का सही गलत सब काम करना पड़ेगा। इस सिद्धांत को आधुनिक भारत में जिन लोगों ने तोड़ा और ईमानदारी से काम करते हुए सफल रहे उनमें बाबूजी और मान्यवर कांशीराम जी का नाम सर्वोपरि है। इन दोनो विभूतियों ने यह सिद्ध कर दिया कि लोकतंत्र में वोट अर्थात जनता की ताकत सर्वोपरि है। यदि हमने जनता का मन जीत लिया तो पैसा कोई महत्वपूर्ण तत्व नहीं है। **बाबूजी चुनाव के लिए चंदा लेते थे परंतु किसी भी गलत आदमी से पैसा नही लिया उन्होंने। वह साफ साफ कहते थे कि पैसा लगता है चुनाव में लेकिन इतना भी नहीं कि अपराधियों के पैसों की जरूरत पड़े।** वैसे भी देश की कुल आबादी में 85 प्रतिशत हिस्सा शोषितों का है यदि हम उनके कल्याण के लिए काम करें, उनके क्षेत्रों में विद्यालय खुलवाएं चिकित्सालय खुलवाएं उन्हें देश की समृद्धि के प्रत्येक क्षेत्र में आरक्षण दिया जाय तो वोट तो बिना मांगे ही मिलेंगे। इसमें पैसे की विशेष आवश्यकता कहां पर है? पैसा केवल उतना ही चाहिए जितना अपनी बात पहुंचने के लिए आवश्यक हो। इसी सिद्धांत पर वह उनतालिस साल तक लगातार सदन में बने रहे और उन्हीं की बदौलत आज अंबेडकरनगर शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश में सबसे आगे है।

चित्र सं. 37

बाबा साहब और गांधी जी से विशेष प्रेरणा

महात्मा गांधी ,बाबूजी के आदर्श थे। उनके आदेशों के अनुसार वह सूत कातना और चरखा चलाना स्वराज्य का मार्ग मानते थे। चरखा कातना उनका नित्यप्रति का नियम था। यहां तक कि चरखा का साथ वह उस समय भी नहीं छोड़ते थे जब वह यात्रा पर होते थे। उनकी खादी वस्त्रों के प्रति यह अगाध श्रद्धा अकबरपुर के खादी आश्रम उद्योग की सफलतापूर्ण संचालन और इसके तत्समय के सबसे बड़े औद्योगिक केंद्र के रूप में स्थापना में साफ साफ परिलक्षित होती है। इसी तरह से बाबा साहब डा भीमराव अम्बेडकर उनके आदर्श थे। वह उनकी सूक्तियो को जीवन का आदर्श मानते थे। **बाबा साहब के आदेशों कि खाना भले ही आधापेट खाओ परंतु शिक्षा पूरी प्राप्त करो के अनुपालन में उन्होंने अपना जीवन लगा दिया शिक्षालयों की स्थापना में।** बाबूजी ने जब बाबा साहब की कहानी में यह पढ़ा कि बाबा साहब डा भीमराव अम्बेडकर जब गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन जा रहे थे उस समय उनके बेटे की इलाज के अभाव में मृत्यु हो गई थी और उसके मृत शरीर को घर पर ही छोड़ कर वह जहाज के लिए निकल गए थे, इसलिए कि उनके करोड़ों बच्चों के हितों की रक्षा हो सके, उन्होंने गांधीजी के बाद बाबा

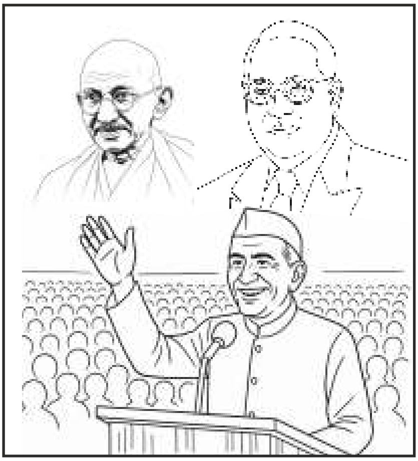

चित्र सं. 38

साहब को अपना आदर्श मान लिया था और बाबा साहब की बात आने पर वह गंभीर हो जाते थे परंतु कुछ बोलते नहीं थे मूक नायक अखबार की भांति, वह कार्य करने में ही विश्वास करते थे। हमारे बच्चे को जब बुखार आता है तो हम अपने कार्य स्थल से भाग कर घर आ जाते हैं उसकी मां के भरोसे नहीं छोड़ते हैं। यहां बाबा साहब का बेटा मर चुका था फिर भी वह रुके नहीं। देश की गरीब जनता के लिए भविष्य की पीढ़ी के लिए। बाबूजी के ऊपर जब भी विपत्ति आती थी वह बाबा साहब के इसी त्याग को याद कर लेते थे उनका अपना दुख दर्द गायब हो जाया करता था। तत्कालीन व्यवस्था के अनुसार वह जानते थे कि इस व्यवस्था का सीधा विरोध संभव नहीं था। वर्ण व्यवस्था के कानूनों से वह इतनी अच्छी तरह वाकिफ थे। उनका पक्का विश्वास था कि स्कूलों की स्थापना के बिना हिंदू समाज के पुरोहितों के मकड़जाल से निकल पाना मुश्किल ही नहीं असंभव है। उनका मानना था कि पिछड़े समाजों के जो लोग कृषि और उसके अनुषंगी क्षेत्रों में कार्य करके आगे बढ़ गए हैं और क्षमतावान हैं उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे आना चाहिए ,शिक्षालय खोलने चाहिए तभी उनका समाज आगे बढ़ पाएगा। गुरुकुल पूरी तरह पुरोहितों के कब्जे में थे और आज भी हैं। उनकी जमात यह मानने को तैयार ही नहीं थी कि शिक्षा सबके लिए है। वह पूरी तरह वर्ण व्यवस्था के आगे कुछ देख ही नहीं पाते थे। वह यह मानते ही नहीं थे कि पिछड़े समाजों को भी पठन पाठन करना चाहिए। उनका अभी भी सादियों की गुलामी के बाद भी यही मानना है कि शूद्र समाज का काम ही ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना है। अत: जब तक इन समाजों के क्षमतावान लोग आगे आकर विद्यालय नहीं खोलेंगे तब तक यह समाज जो कि जनसंख्या का 65 प्रतिशत है आगे नहीं बढ़ पाएगा।

ज्योतिबा और माता सावित्री थे आदर्श

बाबूजी का सपना था शिक्षित एवं विकसित समाज। देश और समाज के सभी नागरिक विशेष रूप से पिछड़े और कमजोर नागरिक और महिलाएं भली प्रकार शिक्षित हों। **सभी के लिए प्राथमिक शिक्षा और कड़ी स्क्रीनिंग आवश्यक और अनिवार्य शर्त थी इसके लिए। यही अंग्रेजों ने लागू किया था कानून बनाकर। भारतीय दण्ड संहिता और अपराध प्रक्रिया संहिता के रूप में। यहीं से पुरोहितों का उनसे संघर्ष शुरू हुआ और जिसकी परिणति हुई स्वाधीनता संग्राम के रूप में।** देश के पुरोहित यह मानने के लिए तैयार ही नहीं थे कि शिक्षा सभी के लिए है। वह साफ साफ कहते थे कि शिक्षा केवल 15 प्रतिशत लोगों के लिए है (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य)। मतलब वर्ण व्यवस्था या सवर्ण व्यवस्था। केवल 15 प्रतिशत के लिए सारी सुविधा और अधिकार और 85 प्रतिशत के लिए नौकर अर्थात कोई अधिकार नहीं कोई सुविधा नहीं। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें बहुसंख्यक समाज को कोई अधिकार नहीं थे। यही वर्ण व्यवस्था ही हमारा कानून था।

स्कॉटिश विद्यालय बंद करने पड़े थे

इसी के विरुद्ध शुरुआत की गई थी सभी के लिए शिक्षा के द्वार खोलकर माता सावित्री और ज्योतिराव फुले के द्वारा। इसके पहिले अंग्रेजों ने भी कार्य किया था, स्कॉटिश मिशनरी स्कूल के द्वारा। परंतु अतिशय विरोध के चलते सफल नहीं हो पाए थे। स्कॉटिश मिशनरी विदेशी थे। विदेशी विदेशी का नारा लगाकर उसे फेल कर

चित्र सं. 39

दिया गया। जैसे आज स्वदेशी स्वदेशी का नारा लगाया जाता है और जिस तरह साइमन कमीशन के साथ हुआ था। **माता सावित्री ने जब अपने बालिका विद्यालय खोले तो भी भयंकर विरोध किया गया पुरोहितों के द्वारा। महिलाएं पढ़ लेंगी तो अनिष्ट हो जायेगा, बाढ़ भूकंप महामारी आदि आपदा आ जायेंगी। यह कोई बहुत पहिले की या कोई बड़ी बात नहीं है आज भी पुरोहितों ने जो कह कह दिया, होगा वही।** पहले पति के साथ जिंदा जलाने का आदेश होता था। देवदासी नामकी वेश्यावृत्ति की प्रथा हुआ कती थी और अब इस समय पति के साथ महिलाएं भयंकर ठंड में नदी में घुटनों तक पानी में खड़े रहकर सूर्य की पूजा करती हैं,निराजल वृत (बिना पानी पिए पूरे दिन रहना) पुरोहितों के आदेश पर। विचारणीय है कि आज के समय में भी यह हो रहा है तो 150 वर्ष पहिले क्या रहा होगा ?

शिक्षा का प्रसार : एक मात्र विकल्प

बाबूजी ने इस तथ्य को समझा और विचार कर निष्कर्ष निकाला कि जैसे भी हो शिक्षा का प्रसार ही एक मात्र रास्ता है। माता सावित्री और ज्योतिराव फुले उनके आदर्श के रूप में हमेशा सामने रहते थे। अब चूंकि पढ़ने लिखने की परंपरा ही नहीं थी। लेखक और पाठक कहां से पैदा होते? यही कारण था कि माता सावित्री और ज्योतिराव फुले का नाम बाबूजी के समय में आया ही नहीं। इसके लिए स्कूल खोलना अनिवार्य है। पुरोहितों के स्कूल से काम नहीं चलेगा। पुरोहितों के स्कूल में वही शिक्षक हैं और वह किसी अन्य को पढ़ने देना नहीं चाहते। तो पिछड़े समाजों के स्वामित्व वाले विद्यालय खोलना ही एक मात्र विकल्प है। बाबूजी का जीवन इसी विद्यालयों की स्थापना में निकल गया। वह जमींदारों को प्रोत्साहित करते थे कि विद्यालय खोलें और विद्यालय का नाम उनके पूर्वजों के नाम पर रखें , जिससे लोग प्रोत्साहित हों। चूंकि कलम जिसके हाथ में थी वह बाबूजी के कार्यों का विरोध करता था परंतु बहुत हिसाब से। जिससे विरोधी को पता ही न चले। यदि पता चल जाएगा तो वह सावधान हो जायेगा और फिर इनकी संख्या बहुत ज्यादा है , यही कारण है कि उनके द्वारा खुलवाए गए बहुत से विद्यालयों की जानकारी ही नहीं है या गायब कर दी गई।

शाहूजी महाराज थे प्रेरणास्रोत

बाबूजी शाहूजी महाराज के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे। चूंकि उस समय और आज भी कलमकार / लेखक जितना लिखते हैं, उतना ही छपता है, जितना छपता है उतना ही पढ़ा जाता है ,जितना पढ़ा गया उतना ही सत्य। जो न लिखा, गया न पढ़ा गया वह असत्य और झूठ। शेष के बारे में पता ही नहीं सही गलत तो तब होता जब वह छपता ? चूंकि यह वर्ण व्यवस्था का मकड़जाल था कि पढ़ने वाला भी वही ,बोलने वाला भी वही, पढ़ाने वाला भी वही, स्कूलों का मालिक भी वही, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, छापाखानों का मालिक भी वही, कर्मचारी भी वही, अधिकारी भी वही, न्यायालय में अधिवक्ता भी वही, न्यायाधीश भी वही, मुवक्किल भी वही, मतलब पढ़ने लिखने का अधिकार ही था केवल ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को ! यही देश का कानून था यही सारी संहिताओं और स्मृतियों चाहे वह मनुस्मृति हो, अत्रि स्मृति हो देवल स्मृति हो या याज्ञवल्क्य स्मृति हो में लिखा था कानून के तौर पर। शूद्रों जिन्हें आज हम पिछड़े और दलित के नाम से जानते हैं, उन्हें कानूनन अधिकार ही नहीं था पढ़ने का। जब पढ़ने का अधिकार ही नहीं था तो कोई मतलब ही नहीं मानव जीवन का, पशु और मनुष्य में केवल बोली का फर्क। जो कुछ भी समाज में देश में अच्छा था उस पर पुरोहित और प्रभु समाज का कब्जा था। यह पुरोहित और प्रभु समाज पिछड़ों को मनुष्य मानने के लिए तैयार ही नहीं था और आज भी नहीं है। इस मकड़जाल को शाहूजी महाराज ने बहुत ही गहराई से समझा था। **शाहूजी महाराज राजा थे फिर**

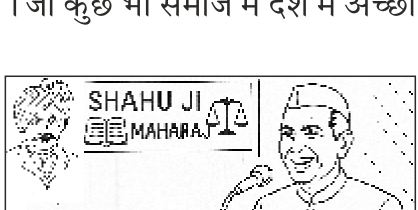

चित्र सं. 40

भी यह ध्यातव्य है कि उनके राजमहल की महिलाएं केवल उतना ही सही मानती थी जितना पुरोहित कहते थे इस बात से बेखबर कि यही पुरोहित ही शाहूजी महाराज का अपमान करते हैं। उनके नौकर हो कर भी ! यह विचारणीय विषय है कि जहां यह पुरोहित शासक की भूमिका में होंगे वहां यह क्या करते होंगे? इसे शाहूजी महाराज ने देखा और महसूस किया था।

यही निगाह बाबूजी की भी थी। **बाबूजी राजा नहीं थे , नहीं तो वह भी आदेश कर अपने क्षेत्र के समस्त गांवों में विद्यालय और छात्रावास खुलवा देते।** बाबूजी की भी यही धुन थी कि जैसे भी हो पिछड़े समाजों का कोई भी बालक शिक्षा से वंचित न रहे। उनके समय में भी अपने नाम के आगे सिंह उपनाम लगाना बहुत प्रचलित था। जैसे श्री नरेंद्र सिंह , श्री भानु प्रकाश सिंह आदि।

जाति छिपाना मजबूरी, उद्देश्य नहीं

तत्कालीन कैबिनेट मंत्री नरेंद्र सिंह से बाबूजी इस बात पर नाराज रहते थे कि ठीक है शाहूजी महाराज ने ससम्मान जीने का एक रास्ता दिखाया परंतु उसका दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। **यह टाइटिल उनके लिए है जो कमजोर हैं जाति छिपाना उनकी मजबूरी हो सकती है हम तो सक्षम हैं हम इसका प्रयोग क्यों करते हैं ? इसी का प्रभाव था कि नरेंद्र सिंह ने अपने नाम में चौधरी लगा लिया था।** कमजोर और पिछड़े समाज का उत्थान ही मिशन था बाबूजी का और अपने इसी मिशन में उन्होंने पूरे जीवन को लगा दिया। नियति की भयंकर क्रूरता के चलते हुए भी। वैसे जहां दुश्मन घर के अंदर ही बैठा हो और उसने चूल्हे चौके में अपनी जड़े जमा रखी हों इस कदर कि उसकी अनुमति के बिना कोई कार्य होता ही नहीं है ,आज भी पिछड़ा और दलित समाज अपने बच्चों के शादी ब्याह भी बिना पुरोहितों से पूछे नहीं करता। तो कुछ भी उपद्रव असंभव नहीं है देश के जिन भी महान व्यक्तित्वो ने शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ों को आगे बढ़ने का प्रयास किया उनको नियति की क्रूरता का शिकार होना पड़ा है।

माता सावित्री पर हमला

चित्र सं. 41

माता सावित्री बाई के ऊपर छोटे बड़े हमले और जब इससे बात नहीं बनी तो प्राणघातक हमला पुरोहितों ने करवाया था इसलिए कि वह बेटियों को पढ़ा रही थीं छोटे स्तर पर ही सही , यह तो ज्योतिराव फुले और माता सावित्री फुले की प्रज्ञा थी कि उन्होंने हमलावरों को अपना ही रक्षक बना लिया। शाहूजी महाराज और बाबू जय राम वर्मा साहब तो बड़े स्तर पर कार्य कर रहे थे।

औद्योगीकरण कर विशेष ध्यान

शाहूजी महाराज की तरह ही बाबूजी ने भी अपने क्षेत्र का औद्योगीकरण किया। वह यह अच्छी तरह जानते थे कि खेती भले ही समाज और देश की जीवन रेखा हो परंतु उससे केवल जीवन यापन हो सकता है विकास नहीं। उस समय के हिसाब से स्पिनिंग मिल, खादी भंडार, विकसित गांधी आश्रम, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल बाबूजी के सपनों की ही देना है। तत्कालीन फैजाबाद में थर्मल पावर प्रोजेक्ट उनके भविष्यदृष्टि की द्योतक है।

चित्र सं. 42 टाण्डा थर्मल पावर प्रोजेक्ट, टाण्डा

राष्ट्रहित सर्वोपरि

> “ संविधान
> सामाजिक और शैक्षिक रूप से कमजोरों, पिछड़ो,
> दलितों को विशेष संरक्षण दिया जाय। ”

1. कमजोरों को संरक्षण : आधुनिकता की पहचान

पिछड़ों, दलितों, कमजोरों और महिलाओं को विशेष संरक्षण देना आधुनिकता की पहिचान है। **सभी विकसित देशों में इस तरह की व्यवस्था है। सभी विकसित देश अपने नागरिकों में कमजोरों, पिछड़ों, दलितों और महिलाओं को विशेष संरक्षण देते हैं और यही विशेष संरक्षण ही देश और समाज को महान बनाते हैं।** हमारे देश की स्थिति विश्व में अलग है। अब तक हम यही पढ़ते आ रहे हैं कि हमारे देश में बहुत से जातियों, धर्मों,पंथों, संप्रदायों और भाषा बोलने वाले लोग एकसाथ रहते हैं, अनेकता में एकता हमारी पहिचान है, सर्व धर्म समभाव हमारी संस्कृति है। परंतु यह नहीं पढ़ाया जाता है कि हमारे यहां वर्ण व्यवस्था नामक सिद्धांत लागू है जो पढ़ने लिखने का अधिकार ही नहीं देता है कमजोरों, पिछड़ों और दलितों को। बाकी चीजों विशेष संरक्षण की तो कोई बात ही नहीं है।

2. शिक्षा का अधिकार सभी को

बाबू जय राम वर्मा साहब इस तथ्य को जानते थे परंतु जो व्यवस्था लोगों के दिलो दिमाग पर इस कदर हावी हो कि उससे अपने शत्रु की पहिचान ही खो जाय, के चलते सीधी लड़ाई संभव ही नहीं है। पहले हम

यह जान तो लें कि हम भी मानव हैं और मानव होने के नाते हमारा भी अधिकार है शिक्षा का। हमारे देश के प्रभु समाज ने हमारे मनो मस्तिष्क में यह ठूंस दिया था कि पढ़ना लिखना ब्राह्मणों का काम है। हमारा काम केवल सेवा करना है हमारे समाज के वरिष्ठजन और महिलाएं सभी यही मानते चले आ रहे थे कि पढ़ना लिखना उनका काम नहीं है। मतलब मानव को मानवता का भी अधिकार नहीं था। यह स्थिति केवल भारत में ही है। **विश्व के किसी देश में इस तरह की व्यवस्था नहीं है कि किसी वर्ग विशेष को पढ़ने ही न दिया जाए, वह भी ऐसे वैसे नहीं बाकायदा कानून, दैवीय कानून बनाकर, धार्मिक आदेश, धर्मग्रंथों में लिखकर। चौंकने की बात नहीं है यह व्यवस्था आज भी लागू है। बकायदा आदेश कर कि कक्षा 8 तक किसी को फेल न किया जाय।**

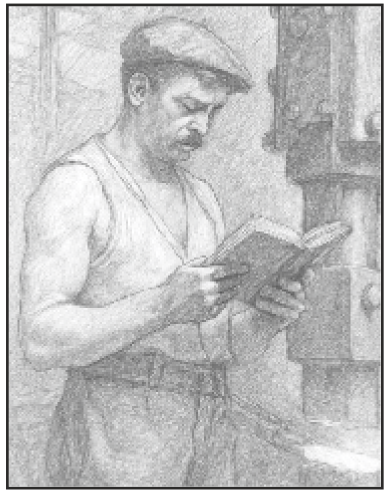

चित्र सं. 43 लोहा गलाने की भट्टी में ग्रन्थ पढ़ता मजदूर (रूस में)

3. मुख्यमंत्री का पद ठुकराया

1969 में चौधरी चरण सिंह की सरकार के अल्पमत में आने के बाद वर्ष 1970 में टांडा के तत्कालीन विधायक श्री राम चंदर आजाद से इस्तीफा दिलाकर बाबूजी को लड़वाया गया। इसलिए कि बाबूजी एम एल सी बनकर सदन में नहीं बैठना चाहते थे। बाबूजी चुनाव जीते परंतु आपसी गठजोड़ के चलते संयुक्त विधायक दल का गठन हुआ और श्री त्रिभुवन नारायण सिंह उसके नेता बने। उन्होंने अपनी सरकार बनाई और मुख्यंत्री बने। बाबूजी को ऑफर दिया गया परंतु बाबूजी ने भारतीय क्रांति दल को छोड़ कर सरकार में शामिल होने से इंकार कर दिया। कुछ समय के **बाद बाबूजी के पास इंदिरा जी का संदेश आया, कि कांग्रेस में वापस आ जाय उन्हें मुख्यमंत्री का पद दिया जायेगा। यह संदेश लेकर**

कांग्रेस के नेता श्री कमला पति त्रिपाठी ने बलदेव सिंह आर्य, ईश्वर शरण सिंह (भाई जी) और अपने बेटे लोक पति त्रिपाठी को इस संदेश के साथ उनके गांव बड़ेगांव इब्राहिमपुर भेजा कि बाबूजी अपने साथियों के साथ सत्ता कांग्रेस में वापस आ जाएं और अपने नेतृत्व में सरकार बनावेँ और प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद संभालें और यदि मुख्यमंत्री न बनना चाहें तो नेता प्रतिपक्ष का पद संभालें। **बाबूजी ने दो टूक कहा कि वह कुर्सी के लिए सिद्धांतों से समझौता नहीं कर सकते। वह इस तरह का मुख्यमंत्री नहीं बनेंगे।** बाबूजी चौधरी चरण सिंह के सिद्धांतों से प्रभावित थे वह उनसे विद्रोह नहीं करना चाहते थे। इस तरह बाबूजी के लिए पद और सत्ता कोई महत्व नहीं रखते थे उनके लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि था और वह जीवन पर्यंत राष्ट्रहित के लिए ही कार्य करते रहे। कभी भी उन्होंने समाज और देश के साथ समझौता नहीं किया।

इस प्रकार मुख्यमंत्री की कुर्सी बाबूजी की चौखट से आकर वापस लौट गई। यही के बरूवा ग्राम के श्री यावर हुसैन जैदी और ग्राम नकटहा के बाबू राम केवल वर्मा जो पूरे राजनैतिक कल में परछाई की भांति बाबूजी के साथ लगे रहे ने कहा बाबूजी मुख्यमंत्री की कुर्सी चल कर आई थी आपके पास अपने ठुकरा दिया। **बाबूजी झल्ला गए ''तो क्या करता मैं सिद्धांतों को तिलांजलि नहीं दे सकता, मेरी दृष्टि में सिद्धांत बड़े होते हैं मनुष्य का व्यक्तिगत लाभ नहीं, तुम्हें सिर्फ कुर्सी दिखाई पड़ रही है मेरे उसूल नहीं एक बार मेरे अंदर झांक कर भी देखो!''**

जैदी साहब नतमस्तक हो गए और उनके सिद्धांतों से समझौता कर लिया।

चित्र सं. 44

पारिवारिक जीवन

व्यक्तिगत जीवन में परिवार की बड़ी भूमिका होती है। परिवार से पालन–पोषण से तथा संरक्षण मिलता है। छोटे भाई के निधन के बाद बाबूजी का पारिवारिक जीवन कष्टमय हो गया। भयहु / अनुज वधू पर ही खेती–गृहस्थी का पूरा भार आ गया। औरत जाति दूसरे संतान हीन। इसी पर भार खेती का, घर का। वर्मा जी नेता थे।ज्यादा समय लखनऊ में ही बीतता था। खेती–बारी की ओर ध्यान नहीं दे पाते थे।

समय नहीं था अथवा समाज देश के दर्द ने इनके व्यक्तिगत पारिवारिक दर्द को भुलवा दिया था। घर गृहस्थी की ओर से उदासीन होने के कारण इनकी अनुज वधू इनसे नाखुश रहती थी। उन्हीं के मुख से– मेरे मन में उद्‌गार हुआ कुछ लिखने का। कुछ जानने की इच्छा से मैं इनकी अनुज वधू जिन्हें लोग मोटको कहते हैं, उनसे मिला।

मैने पूछा– 'मास्टर साहब के बारे में कुछ बताइये।'

'हम गंवार मेहरारु का बताउब।'

'खास बात जो याद हो।'

मैंने ही पूछा– 'उनसे कभी झगड़ा हुआ है।'

'हाँ। होत रहा। मुला हम बोली ज्यादा वे बोलैं कम।'

'तो आपकी क्या इच्छा रहती थी।'

'हमार मन कहत रहा। आपन खेती घर संभारैं मुल निफिकिर रहैं।'

कभी झगड़ा भी होता था क्या?

‘हम से कभी–कभी रुपया मांगे। गोहूँ, चाउर, तेल

घिव सब यहीं से जाय। देख भाल हम करी ।’

‘आपके पास पैसा तो रहता रहा होगा। अनाज बेचती रही होंगी।’

बताने लगी–

श्रीमद् भागवत बैठी थी। हमसे कहा, नौ सौ रुपया हमें

दो। कम पड़ रहा है।

‘हमरे पास पैसा कहाँ बा।’

‘इन्तजाम कर कर दो।’

इस बात पर थोड़ा झगड़ा हुआ था ।

फिर बताया–

‘हमसे उनसे एक साल बोल–चाल नाय रहा जब आवैं हमार भतीजी बनावैं–खिलावैं। पूछै तौ हम्मैं मुला हम सामने न परी। खेती बारी निकल जावा करी।’

एक बार लखनऊ जाय लागिन तौ पूंछिन तोहार फूआ कहाँ हईं। भतीजी बताइस खेते मां गईन। चला गय हईं। बोलै का कोशिश करतिन, हमसे बोलतिन, मुला हम ऐंठी रहित।’

‘तब’

कबहुं–कबहुं हँसी करै! खात थोड़े रहिन। एक दिन चार रोटी

मोट–मोट बनाय दिहन ।

‘संझा कै कहेन चला खाय ल्या।’

तौ कहिन– मोट–मोट रोटी खवाय दिहूं।

‘जौने दिन भर भुखाई ना।’

‘एहू जून भूख नाय लाग ऐसन खियाय दिहू ।तौको मुसाकियाय लागिन ।

‘वहीं बगल परोसी दयाराम रहिन उनसे कहेन देख्या भइया, नेकिउ करै बदनामिऔ उठावै।’

‘खाये कि नहीं।’

‘खाइन है।’

‘और..................।’

एक दांय वनसे कहेन गोहूँ, चाउर उठाय–उठाय लई जाय्या कहाँ से देई। खेत परतियाय जात बाय।

दूब हवै गय बा सज्जी।

‘तब का करी।’

‘जा बीना।’

‘चला गइन चाय पीये रहिन। हम हरवाहेन का दाना लैके गै रहेन । देखेन दूब बीनत रहिन।’

अच्छा उठा। बड़ा बिनवार बना हया।’‘तुहीं तौ कहिउ है।’

घर ग्रामीण भाषा में ही बोलते थे। परिवार से बोलते समय खास कर हमने देखा, सुना है, गाँव के आदमियों से भी देहाती भाषा का प्रयोग करते थे। तब आइन नहाइन खाइन। लखनऊ गइन।

‘एक बार का जिकिर है। हम्मैं नइहरे से कुछ रुपया मिला वोका हम जमा कै दिहन ।पता पाइन कहिन, केकरे नाव जमा किहू।’

‘अपने।’

‘खाली अपने।’

‘केहू का वारिश बनाय देतिउ।’

‘काहे कां।’ उतौ हमारे नइहरै के है ।

‘हम्मै काव देथ्या।’

‘कहिन’ 1500 (पन्द्रह सौ पाईथै पूर नाय परत कहाँ से देई ।

मना हमारौ कर थै देई तुहै लेकिन।

‘दकाव एम० एल० ए० मंत्री तूं हया तोहरे पास रुपयो नायबा ।

‘हां।’

‘काहें।’

‘ज्यादा तनख्वाह नाय मिलत।’

‘तव छोड़ देया।’ खेती–बारी सम्हरवावा हमहूँ का कुछ आराम मिलै ।

‘तब क्या कहा।’

‘कुछ नाय बोले।’

‘आप जानती हैं क्यों नहीं बोले।’

‘‘उन्हें अपनी फिकर परिवार की फिकर कम बड़ी फिकर सबकी थी।’’

‘काव बड़ी फिकर सबकी फिकर रही।’

पूरे गरीब लोगों की, पूरे दुखियारों की और कोई बात – (हाँ) एक दिन हम कुछ बड़बड़ात रहेन। याद नाय बा कौन बात रही मुला यतना याद बा, कहिन,

‘दुनियां हम्मै डेराथै हम एन्हैं ।’

मोटकौ से बतियाने के बाद मुझे एहसास हुआ कि वर्मा जी की जिंदगी कैसी रही।

पारिवारिक जिन्दगी निश्चिन्त नहीं थी। कष्टकारी थी। पारिवारिक कष्ट को झेलते हुए राजनैतिक तूफान तथा राष्ट्रीय कष्ट को धीरता पूर्वक झेलते रहे। समाज की खुशहाली के लिए जीवन का जंग करते रहे ।

– राम केवल वर्मा

जीवन साथी से बिछोह

महापुरुषों का जीवन अपने आप में प्रेरणास्रोत होता है। कष्ट और जीवन के दु:ख उन्हें तोड़ नहीं पाते वरन उनके व्यक्तित्व को और चमका कर परिपक्व और परिष्कृत कर देते हैं। यह हम सबको पता है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की पत्नी का देहांत उस समय हुआ था जब वह न्यायालय में एक मुकद्दमे की पैरवी कर रहे थे।उन्होंने प्राप्त टेलीग्राम को पढ़ा भी नहीं और जेब में रख लिया। परंतु यह ज्ञात नहीं है कि बाबू जय राम वर्मा साहब की पत्नी का देहांत उस समय हुआ था जब वह स्वतंत्रता आंदोलन में कारागार में निरुद्ध थे।

हमको यह भी पता नहीं है कि बाबा साहब डा भीमराव अम्बेडकर जब गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन जा रहे थे उस समय उनके बेटे की इलाज के अभाव में मृत्यु हो गई थी और उसके मृत शरीर को घर पर ही छोड़ कर वह जहाज के लिए निकल गए थे। कितना पत्थर का कलेजा होगा इन महापुरुषों का। बाबा साहब का बेटा मर चुका था इतने पैसे नहीं थे कि इलाज हो सके। मुखाग्नि भी न दे सके थे उसको। वह कैसे अपने सीने पर पत्थर रखकर गए होंगे लंदन, यह हमारी मीडिया नहीं बताती। **बड़े से बड़ा और सुंदर से भी सुंदर विचार और तथ्य मर जाता है , समाप्त हो जाता है यदि उसका प्रचार प्रसार न किया जाय और झूठ का यदि खूब अलंकरण करके प्रचार प्रसार किया जाय तो वह सत्य बन जाता है।** हमारी धर्म व्यवस्था इसी पर आधारित है। **जिसके हाथ में लेखनी है समाज उसी का गुलाम होता है जो लेखनी वाला लिखता है वही सब पढ़ते हैं उसी की बात अंततः सत्य मानी जाती है। जिसके पास लेखनी नहीं है उसके पास मुंह ही नहीं है। वह लाख**

सत्य हो जब वह बोल ही नहीं पाएगा तो कोई सुनेगा क्या और जानेगा क्या? ऐसे में झूठ का ही बोलबाला हो जाता है और सत्य की हार हो जाती है।

पत्नी का देहान्त

यही कारण था कि शिक्षा के प्रसार के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया हुआ था। जीवन में आने वाली पहाड़ जैसी समस्याएं भी उन्हें डिगा नहीं पाईं और वह अपने मिशन में अनवरत लगे ही रहे। बाबूजी पता नहीं किस मिट्टी में बने थे। एक के बाद एक कई घटनाएं ऐसी हुई जो बड़े से बड़े आदमी को तोड़ने के लिए पर्याप्त होती हैं। **युवावस्था में पत्नी का निधन, उसके 6 माह बाद ही छोटे भाई का निधन उस समय हुआ था जब बाबू जी कारागार में निरूद्ध थे। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें वाराणसी कारागार में निरूद्ध किया गया था। मात्र 41 वर्ष की आयु में 1945 में पत्नी का निधन उस स्थिति में हुआ जब वह उनके साथ नहीं थे। सेवा सुश्रूषा कर पाना तो दूर अंतिम दर्शन भी नहीं कर सके ये वह जानकारी कारागार में निरूद्ध बाबूजी की दी गयी। कारागार प्रशासन ने एक माह के पेरोल पर उन्हें छोड़ा परन्तु घर पहुंचने पर केवल यादे ही मिली जीवन संगिनी की।**

चित्र सं. 45

इस घटना के 6 माह बाद ही छोटे भाई भी नियति की क्रूरता का शिकार हो गए। भवितब्यिता को मात्र इतने से ही सन्तोष नहीं हुआ आगे चलकर अपनी आंखों के सामने ही एक मात्र पुत्र, पुत्रवधू की मृत्यु जैसी दारूण कष्टों को भी झेलना पड़ा उनको परंतु बाबूजी ने सब सहा परंतु अपने मिशन से वह कभी पीछे नहीं रहे। ईमानदारी का साथ कभी नहीं छोड़ा और शिक्षा के विकास के लिए जीवन पर्यंत लगे रहे। यह उन्ही की देन है कि अकबरपुर क्षेत्र आज की तारीख में पठन पाठन में प्रदेश ही नहीं पूरे देश में सर्वोत्तम जनपदों में से एक माना जाता है।

चित्र सं. 46

सबसे बड़ी चोट : युवा बेटे कमला का निधन

उस समय संयुक्त परिवार का चलन था। फिर भी बाबूजी का परिवार संयुक्त होते हुए भी छोटा ही रहा। यह नियति का विधान कहें या किस्मत या फिर एक सामान्य घटना या दुर्घटना कि देश के अधिकांश महापुरुषों का जीवन दुखमय ही रहा। बाबा साहब ने कितने दुख देखे यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

कक्षा में बैठने की इजाजत नहीं

उन्हें कक्षा में बैठकर पढ़ने की इजाजत नहीं थी वह कक्षा के बाहर बैठते थे। उनके चार बेटे इलाज के अभाव में दम तोड़ देते हैं। सार्वजनिक तालाब से पानी लेने के कारण उन्हें मारा पीटा भी जाता है। शाहूजी महाराज के राज परिवार में उनके पहिले 50 वर्षों तक कोई छत्रपति 20 वर्ष की उम्र नहीं पूरी कर पाया ,और उस पर भी उनके युवा पुत्र का निधन, शिकार खेलते समय मात्र 19 वर्ष की आयु में ही हो गया था, माता सावित्री और महात्मा ज्योतिराव फुले का नि:संतान ही रह जाना ऐसी घटनाएं हैं जो कहीं न कहीं शंका पैदा कर देती हैं। जो भी हो बाबूजी का जीवन भी दुखों से भरा हुआ था। युवावस्था में बेटे की मृत्यु से बड़ा भौतिक दु:ख इस संसार में कोई दूसरा नहीं हो सकता है। अपने बेटे जिसे गोदी में खिलाया हो उसकी अर्थी भी कंधे पर उठानी पड़े इससे बड़ा कोई कष्ट इस संसार में दूसरा नहीं हो सकता।

चित्र सं. 47

कमला बाबू किडनी के रोगी

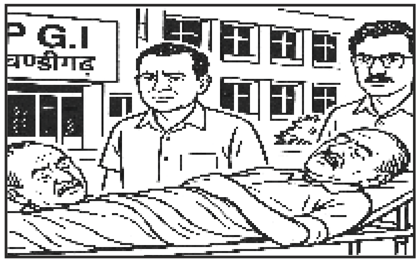

चित्र सं. 48 चण्डीगढ़ में भर्ती कमला बाबू

बाबूजी के बेटे कमला बाबू बनारस में प्रोफेसर थे उनको गुर्दे की शिकायत थी। मात्र 30 साल की उम्र में ही यह पता चला कि उनकी दोनो गुर्दों ने काम करना बंद कर दिया है। कारण डाक्टर नहीं बता सके। तंबाकू आदि कोई ब्यसन नहीं मदिरापान तो बहुत दूर। बाबूजी के खानदान में किसी को कोई ब्यसन नहीं था। कमला बाबू की तो कोई बात ही नहीं सादगी की प्रतिमूर्ति हां पिता की तरह तेज नहीं बिलकुल सज्जन परंतु गुर्दे कब खराब हुए पता नही चला। बहुत इलाज हुआ परंतु दवाओं से कोई लाभ नहीं हुआ। चिकित्सक भी पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। वह आधी आधी बात कह रहे थे परंतु यह भी था कि प्रत्यारोपण ही एकमात्र रास्ता बचा है। अत: जैसे भी हो जीवन बचाने का यही एकमात्र उपाय है। अंत में थक हार कर डाक्टरों ने प्रत्यारोपण की सलाह दी। अब समस्या यह थी कि गुर्दा दे कौन ? बहुत लोग सामने आए। परंतु जैसा कि चिकित्सा जगत में होता है जो तैयार थे उनका रक्त समूह और उम्र नहीं मैच कर रही थी। बाबूजी निराश होकर वापस आने की तैयारी कर रहे थे। **ऐसे में कजरी (जमालुद्दीनपुर) अकबरपुर के बाबू राम अशीष जी सामने आए। बाबूजी निराश हो गए थे उन्होंने मना किया ''क्या फायदा अब कमला बचेंगे नहीं।''**

राम अशीष जी आगे आए

चित्र सं. 49 श्री राम आशीष जी

बाबू राम अशीष जी नहीं माने कहा कि प्रयास करने में क्या हर्ज है। मान लीजिए प्राण नहीं बचेंगे। एक प्रयास कर लिया जाय। बहुत निराश भाव से बाबूजी तैयार हुए। डॉक्टर ने

चेक किया राम अशीष बाबू का रक्त समूह और उम्र दोनो ही मैच कर गई। पी जी आई चंडीगढ़ में डा आर वी एस यादव ने ऑपरेशन किया। ऑपरेशन सफल रहा। बाबूजी के जीवन में एक बार उम्मीद की लहर वापस आ गई। जीवन में पतझड़ की जगह बसंत ने ले ली। उनके चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ने लगी थी। बाबूजी की ऊर्जा एक बार फिर वापस आ गई। परंतु बाबूजी की खुशी मात्र एक साल ही रह पाई। अभी उन्हें बहुत कुछ झेलना बाकी था। डा यादव ने सख्त हिदायत की थी कि प्रत्येक तीन महीने पर जांच के लिए चंडीगढ़ अवश्य आवेंगे। प्रोफेसर साहब को आराम हो गया था और उन्होंने डाक्टर की इस हिदायत को नजरंदाज करना शुरू कर दिया। दो बार तो उन्होंने नियमित चेक अप कराया परंतु उसके बाद वह आलस्य करने लगे। इस संबंध में बाबूजी के अनन्य सहयोगी और पी आर ओ राम केवल बाबू, न्यायाधीश पी सी वर्मा साहब और अनिल वर्मा जी ने बहुत बार कहा कि कमला बाबू आलसी हैं आप टिकट भेज कर उन्हें चंडीगढ़ भेजिए। परंतु बात आई गई हो जाती रही।

एक वर्ष बाद फिर हालत बिगड़ी

इस तरह एक साल पूरा नहीं हो पाया था कि कमला बाबू का स्वास्थ्य फिर बिगड़ने लगा। शरीर ने नया गुर्दा स्वीकार तो कर लिया था परंतु वह बहुत दिन तक काम नहीं कर पाया। डेढ़ साल बीतते बीतते नई जटिलताएं पैदा होने लगीं। फिर वहीं पी जी आई चंडीगढ़ दिखाया गया,भर्ती होने की स्थिति बनी। डॉक्टरों के अथक प्रयास भी इस बार कमला बाबू को नहीं बचा पाए। अंततः चंडीगढ़ के हॉस्पिटल में कमला बाबू के गुर्दे ने काम करना बंद कर दिया और शरीर में जहर फैल जाने से उनका देहांत हो गया। बाबूजी पत्थर हो गए थे। उनकी आंखों के आंसू सूख गए थे। उन्होंने यह भी बर्दाशित किया। ऑपरेशन के बाद ही जीवन की आस बन गई थी। परंतु आस बंध जाने के बाद टूट जाना? यह कैसा खेल था जो प्रकृति खेल रही थी। इस घटना के बाद बाबूजी ने अपने आप को

पूरी तरह समाज सेवा को समर्पित कर दिया। अब वह किसी से अधिक बात नहीं करते थे केवल पार्टी , शिक्षा और गरीब जनता के काम में ही लगे रहते थे। उन्होंने अपने को ब्यस्त रखने का यह तरीका ढूंढ लिया था। वह कभी अपने को खाली होने ही नहीं देते थे। सुबह का समय विद्यालय में बच्चों के साथ उसके बाद का समय राजनीति और पार्टी के लिए। धन्य हैं ऐसे हमारे महापुरुष जिन्होने आंसू नहीं बहाए वरन विद्यालय के बच्चों में देखी अपने बेटे की छवि और चल पड़े अपने मिशन की ओर।

चित्र सं. 50

चित्र सं. 51 नाऊसांडा कॉलेज में राम आशीष जी बाबू जयराम वर्मा की प्रतिमा के साथ

अदम्य साहस और बुद्धिमत्ता के शक्तिपुंज

जब तक हमें सुविधाएं मिलती रहती हैं, सुख समृद्धि के सभी साधन उपलब्ध रहते हैं तब तक शांत रहना प्रसन्न रहना बहुत सरल और आसान है। परंतु कष्ट में, ऐसा कष्ट जिसका कोई निराकरण न हो, जिनपर मानवीय नियंत्रण न हो ऐसे घटनाओं को शांति पूर्वक झेलने के लिए अदम्य साहस और चट्टान सी शक्ति की आवश्यकता होती है।

काली

बुद्धिस्ट वांग्मय अर्थात त्रिपिटक के मज्झिम निकाय में एक प्रसंग आता है। श्रावस्ती में एक गृहस्वामिनी की एक नौकरानी थी काली नाम था उसका। नाम के अनुसार ही उसका रूप रंग भी था। उसकी स्वामिनी अपनी दयालुता और सदब्यवहार के लिए प्रसिद्ध थी। परंतु काली उसकी वास्तविकता जानती थी। अब वह नौकर थी उसकी सुनता कौन ? अतः उसने एक प्रयोग करने की सोची। अगले दिन सुबह वह एक घंटा विलंब से सोकर उठी। उसकी मालकिन ने उसे बहुत भला बुरा कहा। दूसरे दिन वह दो घंटे विलंब से सो कर उठी। दूसरे दिन भी उसकी मालकिन बहुत नाराज हुई और अपशब्दों का भी प्रयोग किया। काली तीसरे दिन एक पहर के बाद सोकर उठी। उसकी मालकिन को इतना क्रोध आया कि उसने दरवाजा बंद करने की बिलाई उसके सिर पर दे मारी। काली का सिर फूट गया और रक्त बहने लगा। अपने रक्त बहते हुए सिर को दिखाते हुए

पड़ोसियों से काली रोते हुए बताने लगी कि जिसे आप लोग इतना विनम्र और दयालु मानती हैं वह इतनी क्रोधी हैं कि उन्होंने मार कर मेरा सिर ही फोड़ दिया। कथानक का तात्पर्य यह है कि हमारे श्रद्धा, बल, सौम्यता, शांतिप्रियता और गुणों को परीक्षा उस समय होती है जब हम कष्ट या संकट में होते हैं। सुख काल में शांत रहना तो सामान्य बात है।

विपदाओं से भरा जीवन

बाबूजी के जीवन में जितनी विपदाएं आईं उनकी कल्पना नहीं की जा सकती। **उनके सामने ही एक एक कर उनके प्रियजन संसार से विदा होते रहे। पत्नी, छोटे भाई, पुत्र, पुत्रवधू और एक पौत्र का निधन उनके सामने ही होता रहा।** आम तौर पर एक घटना ही पर्याप्त होती है तोड़ कर रख देने के लिए। पता नहीं कितना साहस और कितनी शक्ति भरी थी उनके हृदय में कि वह इन घटनाओं को देखते रहे ,सहते रहे और अपने समाज कल्याण के मिशन में लगे ही रहे। उनके बेटे कमला बाबू का जब देहांत हुआ ,शरीर का अंतिम संस्कार हो रहा था। घाट पर अपार भीड़ थी और कोई भी आंख ऐसी नहीं थी जो नम न हो परंतु बाबूजी आराम से राजनीति की बातें कर रहे थे। लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि बाबूजी के चेहरे पर शिकन तक नहीं है। उन्हें किसी ने रोते बिलखते घबराते नहीं देखा।

अन्याय बर्दाश्त नहीं

बाबूजी ईमानदारी और सही काम से कभी डरते नहीं थे और समाज तथा देश के लिए कभी वह पीछे रहते नहीं थे। वह लड़ जाते थे ,अकड़ जाते थे और उनकी धमक से अच्छे अच्छे दुम दबा लेते थे। एक बार का वाकया है। प्रदेश के ईमानदार और कर्मठ आई पी एस अधिकारी के साथ अन्याय हो रहा था तो उसने गुहार लगाई कि बाबूजी भ्रष्टाचारी मुझे

पैसे के दम पर नीचे धकेल कर अपमानित कर रहे हैं। श्री महेंद्र सिंह गंगवार बाबूजी की बिरादरी के थे उस समय कैडर में सबसे वरिष्ठ थे लेकिन उन्हें हटाकर दूसरे कनिष्ठ अधिकारी को डी जी पी बनाया जा रहा था। बाबूजी ने सुना समझा और निर्देश किया साफ शब्दों में कि अन्याय हुआ तो मुझसे बुरा कोई होगा नहीं। चयन बोर्ड के लोग सहम गए और चुपचाप अटैची वापस कर दी। महेंद्र सिंह गंगवार डी जी पी बन गए। दूसरा नेता होता तो पैंट गीली हो जाती कि कहीं जातिवाद का आरोप न लग जाय। घोर वर्ण व्यवस्था के उस युग में।

शक्तिशाली नेतृत्व

कांग्रेस कमेटी में बाबूजी की स्थिति इतनी प्रभावशाली थी कि फैजाबाद और उसके आस पास पार्टी का टिकट उनके यहां से ही निर्धारित होता था। 1962 के चुनाव में बाबूजी के मना करने के बावजूद पार्टी प्रशासन ने आचार्य जे० बी० कृपलानी और आचार्य नरेंद्र देव जैसे दिग्गजो को टिकट दे दिया। इससे खिन्न होकर बाबूजी ने पार्टी के विरुद्ध जा कर इनके सापेक्ष निर्दल उम्मीदवार के रूप में श्री लल्लन सिंह और श्री मदन गोपाल वैद्य को चुनाव में उतार दिया और धुंआधार प्रचार कर उन्हें जिता भी दिया। इस विजय में विहरोजपुर (सूरापुर) के श्री मुख्तार अहमद किदवई का विशेष योगदान था। इन उम्मीदवारों की कोई विशेष राजनैतिक पहचान नहीं थी।

इसी तरह से अकबरपुर सीट जो डॉ. जेतली के निधन से खाली हुई थी उस पर प्रख्यात समाजवादी नेता डा0 राम मनोहर लोहिया के विरुद्ध गांधी आश्रम के श्री करण भाई को निर्दल प्रत्याशी के रूप में उतार कर विजय दिला दी। जबकि डा0 राम मनोहर लोहिया शहजादपुर अकबरपुर के ही रहने वाले थे और प्रख्यात समाजवादी नेता थे। करण भाई बाहर के थे

परंतु इसके बाद भी बाबूजी के विरुद्ध जाकर डॉ. लोहिया चुनाव नहीं जीत पाए।

इसी तरह से फैजाबाद में जिला परिषद अध्यक्ष के चुनाव में पार्टी के वरिष्ठ मंत्री श्री चंद्रभानु गुप्ता ने अपने किसी हितैषी को पार्टी टिकट दिला दिया। इससे नाराज होकर बाबूजी ने श्री हीरा सिंह को निर्दल प्रत्याशी के रूप में चुनाव में उतारा और जिता दिया ।इन घटनाओं से कांग्रेस कमेटी में यह प्रचारित हो गया था कि बाबूजी यदि गधे को भी खड़ा कर दें तो वह चुनाव जीत जाएगा। बाबूजी की जनता पर इस पकड़ के देखते हुए प्रधानमंत्री इंदिरा जी कहा करती थीं कि जय राम वर्मा साहब राजनीति नहीं करते हैं फैजाबाद की राजनीति जय राम वर्मा साहब से चलती है।

चित्र सं. 52

महाप्रयाण : एक युग का अंत

प्रोटेम स्पीकर

शारीरिक कमजोरी के कारण बाबूजी वर्ष 1985 के विधान सभा चुनावों में भाग नहीं लेना चाहते थे। यह जानकारी जब तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को हुई तो उन्होंने कहा कि यदि बाबूजी विश्राम करना चाहते हैं तो हिमांचल प्रदेश के राज्यपाल बन जाय और पहाड़ों पर विश्राम का लाभ उठाएं। बाबूजी ने मना किया कि मुझे अभी विश्राम नहीं करना है। अतः मुझे राज्यपाल नहीं बनाया जाय। हां चुनाव लड़ कर मैं सदन में बैठ सकता हूं। इस तरह उन्होंने 1985 का विधान सभा का चुनाव लड़ा और टांडा से विधायक बने। **उस समय सबसे वरिष्ठ विधान सभा सदस्य होने का गौरव बाबूजी को प्राप्त था। अतः नवनियुक्त विधायकों को शपथ दिलाने के लिए बाबूजी को विधान सभा का प्रोटेम स्पीकर नियुक्त किया गया।** इसके बाद नारायण दत्त तिवारी मंत्रिमंडल में वह नियोजन मंत्री बने।

परंतु दो साल के बाद बाबूजी काफी कमजोरी महसूस करने लगे थे। उन्हें अकेलापन सा लगने लगा था। अंदर ही अंदर उन्हें यह लगने लगा था कि मेरे साथ के सभी लोग जा चुके हैं। मेरे सामने केवल नई पीढियां ही हैं। अब मेरे काम करने का समय पूरा हो चुका है अब मुझे भी प्रस्थान करना चाहिए। अपने सामने ही अपने परिवार के सदस्यों के एक एक कर विदा हो जाने से वह ब्यथित तो थे ही। कभी कभी वह अपनी भावनाएं व्यक्त करते

हुए अपने लंबे जीवन पर अफसोस भी करते थे। पर फिर जब समाज के बच्चों और गरीब जनता पर निगाह जाती तो उन्हें अपने सारे कष्ट भूल जाते और वह फिर लग जाते अपने मिशन में पूरी ऊर्जा के साथ। परंतु दिसंबर 1986 से उन्हें कुछ अंदरूनी शारीरिक कष्ट होने लगा था और वह अपने को शारीरिक रूप कमजोर महसूस करने लगे थे। लेकिन उनका मन थकता नहीं था।

फिर भी तन की अपनी सीमा होती है।उस समय वह योजना के कैबिनेट मंत्री थे। 13 जनवरी 1987 को 10 बजे उनके पास बलदेव सिंह आर्य का फोन आया आर्य साहब ने सलाह दी कि बाबूजी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें और विश्राम करें। उस समय उनके साथ श्री रामचंद्र और बाबू राम केवल वर्मा उनके व्यक्तिगत सहयोगी के तौर पर उनके साथ ही थे। उन्होंने बताया कि फोन पर ही वार्ता करते समय उन्होंने कहा कि यदि मैं काम नहीं करूंगा तो मेरा जीवन आधा ही रह जायेगा। इस दिन भी वह नियमित रूप से सचिवालय गए और अधीनस्थों को दो घंटे डिक्टेशन देते रहे और ऊर्जा की बैठक करते रहे। दोपहर के बाद तीन बजे के आस पास जब वह कालीदास मार्ग बंगला न 26 पर ही थे उन्हें बैचैनी सी महसूस हुई। श्री राम चंद्र और अन्य सहयोगी जो उनके आस पास थे उन्होंने समझा कि बाबूजी वैसे ही कह रहे हैं परंतु थोड़ी देर में उनके बाएं हाथ में दर्द होने लगा। तत्काल ही बलरामपुर अस्पताल के चिकित्साधिकारी डा एस.सी. राय जो बाद में शहर के मेयर भी बने थे, उनके व्यक्तिगत चिकित्सक थे को बुलाया गया। वह आए और चेक किया, दवा दी बताया कि विश्राम करें यह माइनर अटैक है। उनकी दवा से कुछ आराम हुआ परंतु सात बजे के आस पास पुनः उन्हें बेचैनी होने लगी। डा राय दोबारा आए और चेक करने के लिए अस्पताल चलने का आग्रह किया। उन्ही की गाड़ी से वह बलरामपुर अस्पताल पहुंचे। सहयोगी लोग समझ गए कि कोई खास बात जरूर है तत्काल ही न्यायाधीश पी सी वर्मा, श्री राजेश, श्री जैदी आदि सभी

लोग आ गए। राम केवल बाबू जो उनके निजी सहायक थे वह साथ थे ही , उस समय भी बाबूजी बहुत दर्द में नहीं थे कि कराह रहे हों। यहां तक कि व्हील चेयर संभालने वाली महिला को उन्होंने हल्का सा झिड़का भी कि जब नहीं धकेल पा रही हो तो खड़ी क्यों हो हट जाओ दूसरा आदमी ले चलेगा। उनके दोनो बाहों में हल्का दर्द हो रहा था। उन्होंने जीवन में पहली बार सहयोगी से बांह दबाने का आग्रह किया। कभी उन्होंने किसी से अपने हाथ पैर नहीं दबवाए। यह दर्द बढ़ता ही जा रहा था। जैसे ही उन्हें बेड पर जांच के लिए लिटाया गया , वह लेट भी नहीं पाए थे कि एक कराह मुंह से निकली और उनका शरीर एक और लुढ़क गया।

अंतिम यात्रा

बलरामपुर अस्पताल से उनके पार्थिव शरीर को उनके राजकीय निवास 26 कालीदास मार्ग लाया गया। रात से ही प्रदेश के सभी विधायकों अफसरों का जमावड़ा उनके निवास पर लगा रहा। लोगों को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अभी दोपहर में वह कार्यालय में बैठे थे और मीटिंग ले रहे थे अचानक यह क्या हो गया। प्रदेश के सभी वरिष्ठ नेता मंत्री निवास पर पहुंच गए। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री वीर बहादुर सिंह जी उस समय मुंबई गए हुए थे। अतः चौधरी नरेंद्र सिंह की सलाह पर यह निर्णय लिया गया कि प्रातः काल उनके शरीर को अकबरपुर स्थित निवास पर लोगों के दर्शनार्थ भेजा जाए। अतः प्रातः काल सुबह 8 बजे पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनके शरीर को विदा किया गया। 14 जनवरी को अकबरपुर पहुंचते पहुंचते शाम हो गई। यातायात इस समय इतना तेज नहीं था। उनका कार्यक्षेत्र बाराबंकी से ही शुरू हो जाता था। अंतिम दर्शन करने के लिए लोग सुबह से ही इंतजार कर रहे थे।

चित्र सं. 53

झुंड के झुंड लोग रास्ते में इंतजार करते खड़े थे बाबूजी के अंतिम दर्शन के लिए। पैतृक निवास पर पहुंचते पहुंचते शाम हो गई। उनके पहुंचने से पहिले ही हजारों लोगों की भीड़ इब्राहिम पुर केदार नगर में जमा हो चुकी थी उनके अंतिम दर्शन करने को। हर आदमी आतुर था बाबूजी की एक झलक पाने के लिए। पैतृक निवास पर तिल रखने की भी जगह नहीं थी। लोग रो रहे थे पछाड़ें खा रहे थे। सभी यह कह रहे थे कि बाबूजी नहीं विदा हुए हैं एक युग का अंत हुआ है। वास्तव में यह एक युग का अंत था। ईमानदारी सत्यनिष्ठा और बहुजन हिताय बहुजन सुखाए का। 39 साल तक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने और विभिन्न राजकीय पदों पर सुशोभित होने के बावजूद बाबूजी ने अपना कोई निवास नहीं बनवाया था। पैतृक निवास ही इनका निवास था।यहां तक कि अंतिम समय में भी उनके खाते में मात्र 5000.00रुपए ही थे। बाबूजी की यह पास बुक अभी भी राम केवल बाबू के पास सुरक्षित है। लखनऊ या दिल्ली में भी उनका कोई निवास नहीं था। ईमानदारी के लिए इसके बाद कोई प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। इतने लंबे समय तक बाबूजी के कार्य हमे हमेशा ऊर्जा देते रहेंगे। बहुत शान से बाबूजी की अंतिम यात्रा निकाली गई। किलोमीटरों लंबी अंतिम यात्रा थी उनकी। ''जब तक सूरज चांद रहेगा बाबूजी का नाम रहेगा'' के नारों के साथ ऐसा लगता था कि पूरा फैजाबाद मंडल उमड़ आया हो अकबर पुर में अपने नेता का साथ पाने के लिए, अंतिम साथ। जिससे अंतिम आशिर्वाद मिल सके शिक्षा के प्रपितामह का। अकबरपुर का बच्चा-बच्चा जो अब प्रौढ़ हो चुका था कुछ समय साथ हो लेना चाहता था अपने बाबूजी के साथ में भले ही वह चुप थे हमेशा के लिए लेकिन ऐसे लोगों का साथ ही पर्याप्त होता है जीवन को सफल बनाने के लिए। फैजाबाद के अंत्येष्टि स्थल पर इतनी भीड़ हो गई थी कि प्रशासन के सभी प्रबंध विफल हो गए परंतु सभी शोकाकुल परंतु कहीं गड़बड़ नहीं। फैजाबाद मंडल के सभी विधायक नेता सांसद मंत्री जिले और कमिश्नरी

के बड़े अधिकारियों की मौजूदगी में बाबूजी के प्रपौत्र श्री राकेश जी के द्वारा मुखाग्नि दी गई और पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार संपन्न हुआ।

चित्र सं. 54

बुद्ध अम्बेडकर कल्याण एसोसिएशन उ.प्र. (रजि.)

प्रकाशन द्वारा प्रकाशित (ISBN) एवं अन्य पुस्तकों की सूची

	पुस्तक का नाम	लेखक / रचनाकार	मूल्य
1.	जिन्दाबाद जेलखाना (रूबाइयों में)	डॉ. माता प्रसाद	70.00
2.	सुराही (लघु कथा)	डॉ. पूरन सिंह	60.00
3.	सामाजिक क्रांतिकारी प्रजापति संतराम बी.ए.	संकर्षण प्रजापति	70.00
4.	कुम्हारों की मनोदशा	संकर्षण प्रजापति	80.00
5.	महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग	डॉ. अमर सिंह	35.00
6.	बोधिवृक्ष की छांव में	डॉ. अमर सिंह	35.00
7.	कवि सुंदरलाल (कविता)	डॉ. अरविन्द कुमार	35.00
8.	दुस्साहस (कविता)	डॉ. अरविन्द कुमार	80.00
9.	यादों के झरोखे से (आत्मकथा)	डॉ. एम.डी. इंगोले	70.00
10.	कछुआ सा सिमटा दलित (गजल संग्रह)	संतोष कुमार	50.00
11.	जनवादी लेखक एवं इतिहासकार एस.के. पंजम	ज्ञानप्रकाश जखमी	30.00
12.	सत्य ज्ञान अमर बोध	डॉ. अमर सिंह	30.00
13.	राजनीति की पचसई	डॉ. माता प्रसाद	40.00
14.	परिश्रम का चमत्कार (कविता)	हुब राज	50.00
15.	धर्म परिवर्तन (नाटक)	डॉ. माताप्रसाद	50.00
16.	राजनीति और दलित साहित्य के योद्धा	ज्ञानप्रकाश जखमी/ डॉ. माता प्रसाद	100.00
17.	दीप शिखा (लघु कहानियाँ)	ज्ञानप्रकाश जखमी	40.00
18.	पामाल हुए मालामाल (कविता)	सुनीता बौद्ध	40.00
19.	पल्लव (लघु कहानी संग्रह)	वी.आर. अम्बेडकर	40.00
20.	जख्मों से भरे जखमी	वी.आर. अम्बेडकर	30.00
21.	सामान्य ज्ञान	हुब राज	30.00
22.	आदि–वंश–कथा	डॉ. अंगनेलाल	25.00
23.	लोकगीत अमृत	काशीप्रसाद जाटव	50.00
24.	तिथियों के आईने में डॉ. अम्बेडकर का संघर्ष	ज्ञानप्रकाश जखमी	30.00
25.	धर्म शास्त्र और शूद्र	भिक्षु अमर ज्योति	15.00
26.	झलकारी बाई रेडियों नाटक	माता प्रसाद	40.00
27.	दास्ताने मछली शहर और गुलामी के दिन	माता प्रसाद	70.00
28.	भदन्त ग. प्रज्ञानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	ज्ञानप्रकाश जखमी	60.00
29.	बोधिसत्व बाबासाहेब टुडे पत्रिकाओं में अम्बेडकरवादी विचारधारा	डॉ. पंडित बन्ने/ वी.आर अम्बेडकर	(P/B) 350.00 (H/B) 550.00
30.	मा. कांशीराम की चिट्ठी	बुद्धेश्वर प्रसाद खुटियारे	70.00
31.	मानवता के मसीहा बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन दर्शन लेखक	इं.एन.के. गौतम /डॉ. बी.आर.बुद्धप्रिय	60.00
32.	धम्मपथ प्रदर्शिका लेखक	इं.एन.के. गौतम /डॉ. बी.आर.बुद्धप्रिय	नि:शुल्क
33.	डॉ. माता प्रसाद की कहानी चित्रों की जुबानी	ज्ञानप्रकाश जखमी	1500.00
34.	तिथियों के आइने में मा. कांशीराम का जीवन संघर्ष	ज्ञानप्रकाश जखमी	75.00
35.	भारतीय संविधान (संक्षिप्त सार–संग्रह)	वी.आर. अम्बेडकर	50.00
36.	चेतना के बीज,	जलेश्वरी गेंदले,	70.00
37.	बुद्ध और उनका धम्म,	संपादक–प्रभु दयाल बंजारे	सहयोग
38.	बौद्ध संस्कार	नानक चन्द्र	110.00
39.	आधी रोटी	हरि शरण गौतम	300 व 350
40.	भीमायण	डॉ. जी.सी. भारद्वाज	–
41.	भारतीय संविधान (संक्षिप्त सार–संग्रह सरल भाषा में)	इं. एन.के. गौतम / ज्ञानप्रकाश जखमी	50.00
42.	भारतीय संविधान (संक्षिप्त परिचय)	इं. एन.के. गौतम / ज्ञानप्रकाश जखमी	15.00
43.	आधुनिक बहुजन विभूतियाँ	वी.आर. अम्बेडकर	50.00
44.	भगवान बुद्ध के मूल उपदेश	डॉ. डी.के. वर्मा	150.00
45.	महान विभूतियों के विचार	नानक चन्द्र, आसना सिंह	100.00
46.	बेसिक शिक्षा– तब और अब	नानक चन्द्र, आसना सिंह	100.00
47.	संविधान ज्ञान	एड. राजाराम गौतम	60.00
48.	माता सावित्री की अमर कहानी लेखिका	सविता वर्मा	70.00
49.	अम्बेडकर नारी उत्थान (गीत)	डॉ. आर.आर. जैसवार	5000
50.	संत गाडगे बाबा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	ज्ञानप्रकाश जखमी	60.00
51.	बाबासाहेब की कहानी याद रहे जुबानी	ज्ञानप्रकाश जखमी	30.00
52.	दान देने की कला	बालक राम अम्बेडकर	सहयोग
53.	पिछड़ों के उद्धारक : छत्रपति शाहूजी महाराज	डॉ. डी.के. वर्मा	20.00

अप्रकाशित पुस्तकें

1.	भदंत भिक्खू बोधानंद महास्थविर का व्यक्तित्व व कृतित्व	नन्द किशोर सिद्धार्थ	50.00
2.	सामाजिक परिवर्तन के महानायक विद्रोही भगत सिंह	डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय सम्पादक इं.एन.के. गौतम	60.00
3.	तिथियों के आइने में डॉ. अम्बेडकर का जीवन संघर्ष	ज्ञान प्रकाश जखमी	100.00
4.	मल्लाह अपराध बनाम विकास	डॉ. देवी सिंह अशोक पूर्व पै	250.00
5.	दलित दृष्टिकोण आरक्षण मैं और...	डॉ. सतीश अम्बेडकर	125.00
7.	भगवान बुद्ध के मूल उपदेश (द्वितीय खण्ड)	डॉ. डी.के. वर्मा	–
8.	गुरू ग्रन्थ (बिखरे मोती)	डॉ. गुलाब चंद 'कुसुम'	250.00
9.	विश्व शान्ति संत कबीर कीर्ति स्तम्भ	ज्ञानप्रकाश जखमी	200.00

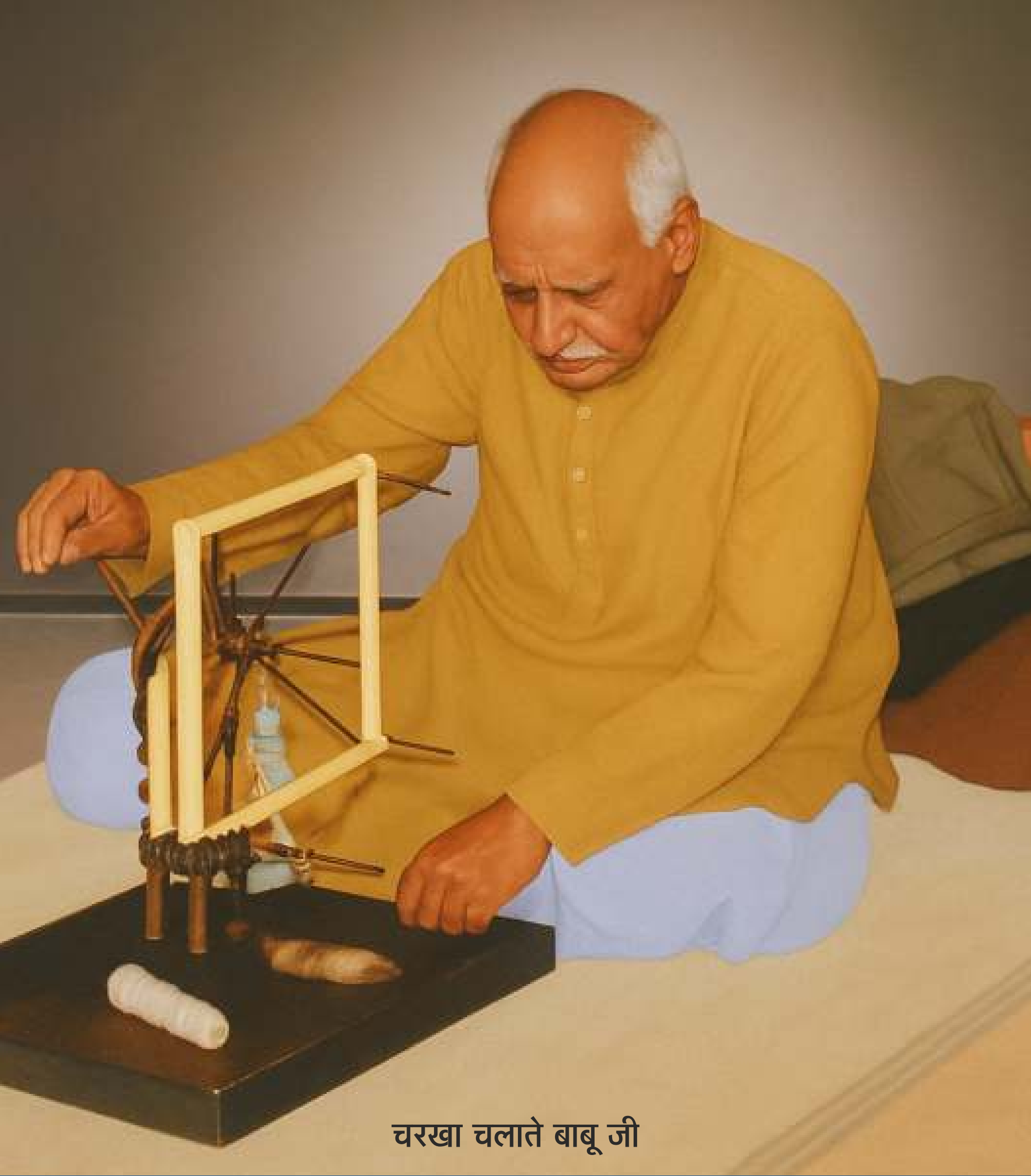

चरखा चलाते बाबू जी

माता सावित्री फाउण्डेशन
रानीडीह चौराहा
पो. खोराबार, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

आवरण सज्जा : सन्दीप सुल्तानपुरी
मूल्य रू 50/-

978-93-95044-79-0

ज्ञानप्रकाश जख्मी
प्रकाशक
प्रकाशन
बुद्ध अम्बेडकर कल्याण एसो0, उ0प्र0 (रजि.)
356/340/835 राजगार्डेन कॉलोनी, आलमनगर, लखनऊ-226017
सम्पर्क सूत्र : 9415941920, 8181819157
Email : baks.gpjakhmi@gmail.com, www.bbtoday.in

Printed by #7800789555